अभिव्यक्ति

24-25

राजभाषा अनुभाग

राष्ट्रीय फ़ैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, चेन्नै

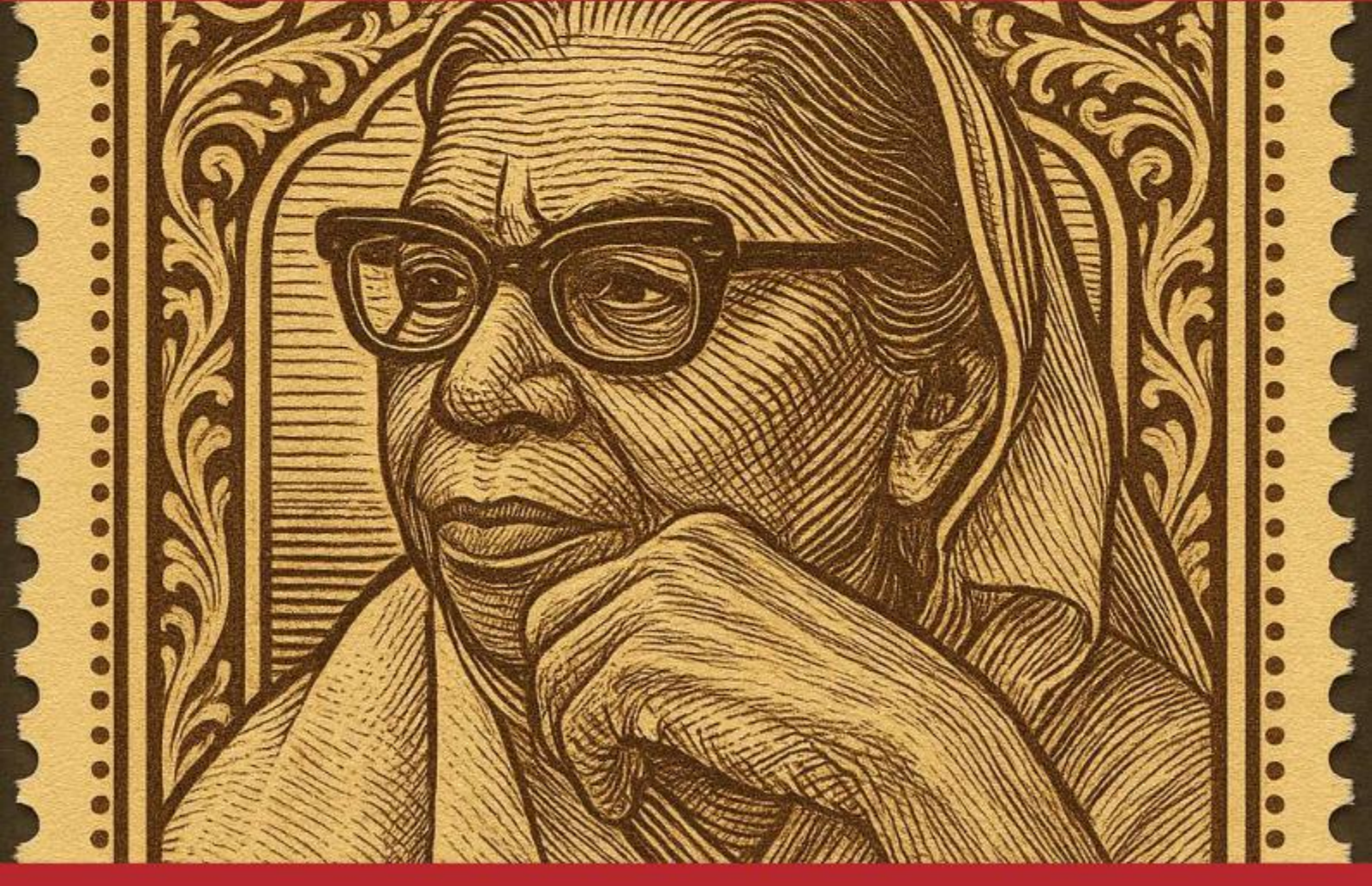

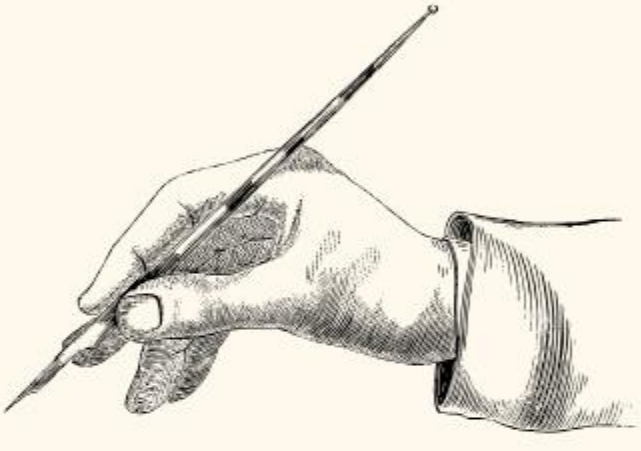

अभिव्यक्ति – खंड 1

© राजभाषा अनुभाग, 2025

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, चेन्नई

“हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोता है”

- सुमित्रानंदन पंत

अभिव्यक्ति : राजभाषा पत्रिका

संरक्षक

डॉ. दिव्या सत्यन
निदेशक, राष्ट्रीय फ़ैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, चेन्नै

प्रधान सम्पादक (सामग्री एवं कला)

सुश्री दिव्या एन.
सहायक प्रोफेसर, फ़ैशन संचार विभाग एवं
प्रभारी, राजभाषा अनुभाग
राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, चेन्नै

सह संपादक

श्री टी. वी. राजेन्द्रन
हिन्दी अनुवादक (एक्सपेर्ट)
राष्ट्रीय फ़ैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, चेन्नै

सहयोग & डिज़ाइन

सुश्री झलक शर्मा, फैशन संचार विभाग- V
सुश्री ए.आर.तेजस्विनी, फैशन संचार विभाग -III
श्री सारंग सी, फैशन संचार विभाग -III
श्री नवनीत कृष्णन, फैशन संचार विभाग -III
सुश्री रश्मि कुमारी , निटवियर डिजाइन विभाग - V

प्रकाशक

राजभाषा अनुभाग
राष्ट्रीय फ़ैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, चेन्नै

सितंबर 2025

पत्रिका में प्रकाशित लेखों और कविताओं में व्यक्त विचार पूरी तरह से संबंधित लेखकों के अपने हैं। सर्वाधिकार सुरक्षित। कॉपीराइट स्वामियों की लिखित अनुमति के बिना इस दस्तावेज़ के किसी भी भाग का पुनरुत्पादन, पुनर्प्राप्ति प्रणाली में भंडारण, या किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग और स्कैनिंग या अन्य किसी भी रूप में प्रसारण नहीं किया जा सकता है।

संघ की राजभाषा नीति

संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी है । संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतराष्ट्रीय रूप है {संविधान का अनुच्छेद 343 (1)} । परन्तु हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भी सरकारी कामकाज में किया जा सकता है (राजभाषा अधिनियम की धारा 3) । संसद का कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जा सकता है । परन्तु राज्यसभा के सभापति महोदय या लोकसभा के अध्यक्ष महोदय विशेष परिस्थिति में सदन के किसी सदस्य को अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुमति दे सकते हैं । {संविधान का अनुच्छेद 120}

किन प्रयोजनों के लिए केवल हिंदी का प्रयोग किया जाना है, किन के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओ का प्रयोग आवश्यक है और किन कार्यों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाना है, यह राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976 और उनके अंतर्गत समय समय पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की ओर से जारी किए गए निदेशों द्वारा निर्धारित किया गया है ।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति 2025

अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति - प्रो. डॉ. दिव्या सत्यन, निदेशक

संयोजक, राजभाषा कार्यान्वयन समिति - सुश्री दिव्या एन. सहायक प्रोफेसर

सदस्य , राजभाषा कार्यान्वयन समिति

डॉ. डी. प्रवीण नागराजन, संयुक्त निदेशक

प्रो. डॉ. सुनीता वासन, प्रोफेसर, टीडी विभाग

डॉ. बीराका चलपति, एसोसिएट प्रोफेसर एवं सी ए सी

डॉ. अमित कुमार अंजनी, एसोसिएट प्रोफेसर, बी एफ टी

डॉ. एस. गोपालकृष्णन, प्रमुख, संसाधन केंद्र

श्री एन. नरसिंहुलु, लेखा अधिकारी

सुश्री भारती धनपाल, सहायक निदेशक

श्री एस. सेंतिल्वेल, एसोसिएट प्रोफेसर एवं सीसी, के डी

डॉ. अ. शशीरेखा, एसोसिएट प्रोफेसर एवं सीसी,एफ एम एस

श्री टी. पी. बालचंदर, सहायक प्रोफेसर एवं सीसी, एल डी

श्री के. कुमारगुरु, सहायक प्रोफेसर एवं सीसी, टी. डी.

सुश्री एम. पद्मप्रिया, सहायक प्रोफेसर एवं सी सी, बी एफ टी

श्री एस. लोर्डसन शिवकुमार, सहायक प्रोफेसर एवं सीसी, एफ सी

श्री आर. उदय राज, सहायक प्रोफेसर एवं सी सी, एफ & एल ए

श्री तोमस सैमुएल, सहायक प्रोफेसर एवं सीसी, एफ पी

श्री सतीश एस. , सहायक प्रोफेसर एवं एस्डाक

सुश्री सरद्धाटी दत्ता, सहायक प्रोफेसर एवं एस्डाक

श्री टी. वी. राजेन्द्रन, हिन्दी अनुवादक (एक्सपेर्ट)

सुश्री के. एस. शशिरेखा, सहायक

सुश्री रबेक्का वसन्ता राणी, सहायक

सुश्री एस. धनलक्ष्मी, प्रयोगशाला सहायक

माननीय वस्त्र मंत्री का संदेश

आप सभी को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं।

भाषा परस्पर संवाद के माध्यम से एक दूसरे को जोड़ने का काम करती है। हिंदी हमारे देश के अधिकांश क्षेत्रों में बोली एवं समझी जाने वाली लोकप्रिय भाषा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात, इसे सर्वसम्मति से 14 सितंबर, 1949 को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया था। यह हमारे देश की सभ्यता एवं संस्कृति की जीवंत परंपराओं और रीति-रिवाजों की भी परिचायक है।

वस्त्र क्षेत्र एक बहुत व्यापक क्षेत्र है और इसके विकास और संवर्धन के लिए मंत्रालय में कई योजनाएं और कार्यक्रम क्रियान्वित किए जा रहे हैं। सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में करके ही हम इन सभी योजनाओं और कार्यक्रमों का लाभ इस क्षेत्र से जुड़े कारीगरों, बुनकरों और कामगारों आदि तक पहुंचा पाएंगे।

हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी के कुशल नेतृत्व में देश हर क्षेत्र में निरंतर आगे बढ़ रहा है और विकसित राष्ट्र @2047 बनाने के लिए हम सब प्रयासरत हैं। वस्त्र क्षेत्र वैश्विक स्तर पर उच्च कोटि मान स्थापित कर रहा है।

मैं वस्त्र मंत्रालय और इसके सभी प्रशासनिक नियंत्रणाधीन कार्यालयों के अधिकारियों तथा कर्मचारियों से आग्रह करना चाहूंगा कि आप सभी अपना अधिक से अधिक सरकारी कार्य राजभाषा हिंदी में संपादित करें और राजभाषा हिंदी को उचित सम्मान दिलाने में अपना अमूल्य योगदान दें।

गिरिराज सिंह
वस्त्र मंत्री
भारत सरकार

महानिदेशक का संदेश

मेरे प्रिय निफ्ट परिवार के साथियों,

हिंदी दिवस–2025 के पावन अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ! किसी भी देश, क्षेत्र अथवा समाज की पहचान उसकी भाषा से होती है। भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति, परंपरा, दर्शन और सामूहिक विचारों की वाहक रही है। हमारी राजभाषा हिंदी ने स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आज तक हमेशा हमें जोड़े रखने और आत्मगौरव का भाव जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आज तकनीक, विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी और वस्त्र जैसे अनेक क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है। यह हम सभी के लिए गर्व का विषय है और प्रमाण भी कि हिंदी अपनी सरलता, सहजता और व्यापकता के कारण समय के साथ निरंतर प्रगति कर रही है । यह आज के दौर में प्रचलित प्रायः सभी क्षेत्रों में अपना स्थान बना चुकी है।

निफ्ट परिवार ने सदैव राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और प्रयोग में सराहनीय योगदान दिया है। हम सभी को अपने स्तर पर यह सुनिश्चित करना चाहिए कि केवल हिंदी पखवाड़े के दौरान ही नहीं, बल्कि पूरे वर्ष हमारे कार्यालयी कार्य यथासंभव हिंदी में संपन्न हों। इससे न केवल हमारी कार्यसंस्कृती में आत्मीयता और सहजता बढ़ेगी, बल्कि हम राजभाषा के प्रति अपने दायित्व का निर्वहन भी कर सकेंगे।

मैं निफ्ट परिवार के सभी अधिकारियों, संकायों और कर्मचारियों से आग्रह करती हूँ कि हिंदी पखवाड़ा–2025 में आयोजित प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी करें । आपकी यह सहभागिता न केवल हिंदी के प्रति सम्मान और आत्मीयता को बढ़ाएगी, बल्कि संस्थान में सकारात्मक वातावरण बनाने में भी सहायक होगी।

आइए, हम सभी मिलकर यह संकल्प लें कि हिंदी के प्रचार-प्रसार और प्रयोग को अपनी कार्यशैली का अभिन्न हिस्सा बनाएँगे और राजभाषा के गौरव को और ऊँचाई प्रदान करेंगे।

जय हिन्द, जय हिंदी, जय भारत।

तनु कश्यप, भा. प्र. से
महानिदेशक,
राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान

निदेशक का संदेश

नमस्कार !

यह मेरे लिए हर्ष और गौरव का विषय है कि राजभाषा हिन्दी के प्रचार – प्रसार के प्रति निफ्ट चेन्नै की प्रतिबद्धता को उद्घोषित करते हुए अभिव्यक्ति पत्रिका का पहला अंक प्रकाशित होने जा रहा है । अभिव्यक्ति के इस अंक के सभी लेखकों को मैं बधाई देती हूं तथा इसके प्रकाशन के लिए जिन्होंने अपनी बहुमूल्य सेवाएँ प्रदान की हैं उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए आशा करती हूँ कि भविष्य में भी ऐसे ही अपना योगदान प्रददन करते रहेंगे ।

"ग' क्षेत्र में, विशेषकर तमिलनाडु में होते हुए भी निफ्ट चेन्नै के कैम्पस में भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए हमने अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं और इनके अनुपालन के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकें नियमित रूप से होती हैं । इस दिशा में हमारे निरंतर प्रयासों की सफल उपलब्धियों में विशेष रूप से उल्लेखनीय है- कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी के प्रयोग, हिन्दी पत्राचार और हिन्दी नोटिंग में हुई वृद्धि तथा इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए मेरे सहकर्मियों द्वारा लिखे गए लेख और उनकी कविताएं ।

भारत सरकार की राजभाषा नीति का आधार प्रेरणा और प्रोत्साहन है किन्तु राजभाषा कार्यान्वयन से संबन्धित राजभाषा विभाग, वस्त्र मंत्रालय और निफ्ट मुख्यालय के अनुदेशों का दृढ़तापूर्वक अनुपालन किया जाना आवश्यक है । इसी को ध्यान में रखते हुए वार्षिक कार्यक्रम के अधीन निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं । इस प्रक्रिया में हिन्दी प्रशिक्षण, हिन्दी कार्यशालाएँ, हिन्दी प्रतियोगिताएं, हिन्दी में सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि के आयोजन द्वारा अनुकूल वातावरण तैयार करने तथा कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग करने वालों को प्रोत्साहन पुरस्कार देना भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है । मुझे विश्वास है कि हमारे निरंतर एवं सक्रिय प्रयत्नों का परिणाम सकारात्मक होगा । अतः हमारे प्रयासों और उपलब्धियों को अभिव्यक्त करने में अभिव्यक्ति पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है ।
अभिव्यक्ति के इस प्रथम अंक के सफलतावूर्वक प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएँ तथा इसके लिए प्रयत्नरत सभी व्यक्तियों के प्रति मैं अपना आभार व्यक्त करती हूँ ।

प्रो. डॉ. दिव्या सत्यन
निदेशक
राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, चेन्नै

संपादक की कलम से

प्रिय पाठकों,

अभिव्यक्त करना यानी अपने विचारों, भावनाओं और कल्पनाओं को शब्दों, क्रियाओं, ध्वनियों और चित्रों के माध्यम से दुनिया तक पहुँचाना। इसी भावना के साथ अभिव्यक्ति पत्रिका, निफ्ट चेन्नई परिवार की भावनाओं, विचारों और रचनात्मकता को आपके समक्ष प्रस्तुत करती है।

पत्रिका का विशेष रूप से डिज़ाइन किया गया शीर्षक हमारे साहित्यिक संसार में लिखित शब्द की शक्ति का प्रतीक है। सितम्बर 2024 में भारत सरकार ने हिंदी के राजभाषा बनने की 75 वीं वर्षगांठ - "हीरक जयंती," के उपलक्ष्य में एक डाक टिकट जारी किया। इसी प्रसंग को उजागर करते हुए, इस अंक का मुखपृष्ठ डाक टिकटों से प्रेरित है। इस पत्रिका के उद्देश्य के अनुरूप, हम आवरण पर एक प्रख्यात कवि और शिक्षिका महादेवी वर्मा जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और हमारी आवरण कथा उनकी उपलब्धियों, विशेष रूप से महिला शिक्षा में उनके योगदान को रेखांकित करती है।

अभिव्यक्ति का यह पहला अंक हमारे संकाय और छात्रों की विविध रचनात्मक यात्राओं का संकलन है। इसमें कला, शिल्प और डिज़ाइन के सम्मिश्रण पर लेखों के अलावा राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रयोग पर रिपोर्ट भी शामिल हैं। हिंदी सीखने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के प्रयोग और महादेवी वर्मा के जीवन पर लेख जहाँ ज्ञानवर्धक हैं, वहीं ईश्वरीय नृत्य जैसे लेख और जीवन के रंग नामक कविता संग्रह पाठकों को बौद्धिक और भावनात्मक रूप से समृद्ध करने का लक्ष्य रखते हैं।

मुझे विश्वास है कि अभिव्यक्ति का यह अंक पाठकों को भाषा, कला और फैशन अध्ययन को एक नए दृष्टिकोण से देखने का अवसर देगा। मैं आपके सुझावों और सहभागिता का आगामी अंकों के लिए हार्दिक स्वागत करती हूँ।

दिव्या एन
सहायक प्रोफेसर, फैशन संचार विभाग
राजभाषा अनुभाग प्रभारी
राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, चेन्नै

अनुक्रमणिका

1	राजभाषा से संबन्धित संवैधानिक प्रावधान	12
2	राजभाषा हिन्दी के संवैधानिक प्रावधान	16
3	महादेवी वर्मा - एक महान कवि और शिक्षक	21
4	राजभाषा की हीरक जयंती का स्मरण डाक टिकट के साथ	23
5	हिन्दी पखवाड़ा समारोह रिपोर्ट	24
6	एआई टूल्स का उपयोग करके आसानी से हिंदी सीखें	28
7	निखरने की बेला	30
8	निफ्ट चेन्नै का हथकरघा और शिल्प उत्सव	31
9	पोक्किशम : क्राफ्ट बाज़ार 2025	33
10	शिल्पकार जागरूकता कार्यशाला, क्राफ्ट बाज़ार और हस्तशिल्प प्रदर्शन - 2025	37
11	खादी महोत्सव - 2024	39

12	वस्त्रों में रचा बसा भारत	41
13	“धागों में बसी विरासत” – मदुरै क्लस्टर भ्रमण की एक झलक	42
14	ईश्वरीय नृत्य - ब्रह्मांडीय ऊर्जा की लयात्मक अभिव्यक्ति	44
15	फैशन के क्षेत्र में भारतीय शिल्पकारों का महत्व	51
16	निजता की तलाश – कविता	53
17	इमेजिनेरियम: फैशन संचार विभाग द्वारा आयोजित कला प्रदर्शनी	54
18	शहर की धड़कन	56
19	भारतीय संस्कृति में नदी और नारी का महत्व	58
20	ख्वाहिश	60
21	डिज़ाइन कैंप –ग्रीष्मकालीन कार्यक्रम 2025	61
22	धरोहर के धागे : ऊटी की टोडा कढ़ाई	64
23	श्रीनगर की यादें	66
24	सुख और दुख की यात्रा	68
25	तनाव और मानसिक बीमारी	70
26	जीवन के रंग - जीवन के विभिन्न रंगों को दर्शाती पांच कविताओं का संग्रह।	71

राजभाषा से संबन्धित संवैधानिक प्रावधान

(भारत के संविधान के भाग – 17)

अध्याय 1- संघ की राजभाषा

अनुच्छेद 120. संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा -

1. भाग 17 में किसी बात के होते हुए भी, किंतु अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, संसद में कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा । परंतु, यथास्थिति, राज्य सभा का सभापति या लोक सभा का अध्यक्ष अथवा उस रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति किसी सदस्य को, जो हिंदी में या अंग्रेजी में अपनी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है, अपनी मातृ-भाषा में सदन को संबोधित करने की अनुज्ञा दे सकेगा।

2. जब तक संसद विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात यह अनुच्छेद ऐसे प्रभावी होगा मानो "या अंग्रेजी में" शब्दों का उसमें से लोप कर दिया गया हो ।

अनुच्छेद 210 : विधान-मंडल में प्रयोग की जाने वाली भाषा -

1. भाग 17 में किसी बात के होते हुए भी, किंतु अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, राज्य के विधान-मंडल में कार्य राज्य की राजभाषा या राजभाषाओं में या हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा । परंतु, यथास्थिति, विधान सभा का अध्यक्ष या विधान परिषद का सभापति अथवा उस रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति किसी सदस्य को, जो पूर्वोक्त भाषाओं में से किसी भाषा में अपनी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है, अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुज्ञा दे सकेगा ।

2. जब तक राज्य का विधान-मंडल विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात यह अनुच्छेद ऐसे प्रभावी होगा मानो " या अंग्रेजी में " शब्दों का उसमें से लोप कर दिया गया हो :

परंतु हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय और त्रिपुरा राज्यों के विधान-मंडलों के संबंध में, यह खंड इस प्रकार प्रभावी होगा मानो इसमें आने वाले"पंद्रह वर्ष" शब्दों के स्थान पर "पच्चीस वर्ष" शब्द रख दिए गए हो:
परंतु यह और कि अरूणाचल प्रदेश, गोवा और मिजोरम राज्यों के विधान-मंडलों के संबंध में यह खंड इस प्रकार प्रभावी होगा मानो इसमें आने वाले " पंद्रह वर्ष " शब्दों के स्थान पर " चालीस वर्ष " शब्द रख दिए गए हों ।

अनुच्छेद 343 : संघ की राजभाषा -

1. संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

2. खंड (1) में किसी बात के होते हुए भी, इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका ऐसे प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था : परन्तु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान, आदेश द्वारा, संघ के शासकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा का और भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा।

इस अनुच्छेद में किसी बात के होते हुए भी, संसद उक्त पन्द्रह वर्ष की अवधि के पश्चात, विधि द्वारा
a.अंग्रेज़ी भाषा का, या
b. अंकों के देवनागरी रूप का,
ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग उपबंधित कर सकेगी जो ऐसी विधि में विनिर्दिष्ट किए जाएं।

अनुच्छेद 344 : राजभाषा के संबंध में आयोग और संसद की समिति -

1. राष्ट्रपति, इस संविधान के प्रारंभ से पांच वर्ष की समाप्ति पर और तत्पश्चात ऐसे प्रारंभ से दस वर्ष की समाप्ति पर, आदेश द्वारा, एक आयोग गठित करेगा जो एक अध्यक्ष और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट विभिन्न भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले ऐसे अन्य सदस्यों से मिलकर बनेगा जिनको राष्ट्रपति नियुक्त करे और आदेश में आयोग द्वारा अनुसरण की जाने वाली प्रक्रिया परिनिश्चित की जाएगी।

2. आयोग का यह कर्तव्य होगा कि वह राष्ट्रपति को--
a. संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी भाषा के अधिकाधिक प्रयोग,
b. संघ के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा के प्रयोग पर निर्बंधनों,
c. अनुच्छेद 348 में उल्लिखित सभी या किन्हीं प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा,
d. संघ के किसी एक या अधिक विनिर्दिष्ट प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने वाले अंकों के रूप,
e. संघ की राजभाषा तथा संघ और किसी राज्य के बीच या एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच पत्रादि की भाषा और उनके प्रयोग के संबंध में राष्ट्रपति द्वारा आयोग को निर्देशित किए गए किसी अन्य विषय, के बारे में सिफारिश करे।

खंड (2) के अधीन अपनी सिफारिशें करने में, आयोग भारत की औद्योगिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक उन्नति का और लोक सेवाओं के संबंध में अहिंदी भाषी क्षेत्रों के व्यक्तियों के न्यायसंगत दावों और हितों का सम्यक ध्यान रखेगा

3. एक समिति गठित की जाएगी जो तीस सदस्यों से मिलकर बनेगी जिनमें से बीस लोक सभा के सदस्य होंगे और दस राज्य सभा के सदस्य होंगे जो क्रमशः लोक सभा के सदस्यों और राज्य सभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित होंगे।

4. समिति का यह कर्तव्य होगा कि वह खंड (1)के अधीन गठित आयोग की सिफारिशों की परीक्षा करे और राष्ट्रपति को उन पर अपनी राय के बारे में प्रतिवेदन दे।

5. अनुच्छेद 343 में किसी बात के होते हुए भी, राष्ट्रपति खंड (5) में निर्दिष्ट प्रतिवेदन पर विचार करने के पश्चात् उस संपूर्ण प्रतिवेदन के या उसके किसी भाग के अनुसार निदेश दे सकेगा।

अध्याय 2- प्रादेशिक भाषाएं
अनुच्छेद 345 : राज्य की राजभाषा या राजभाषाएं

अनुच्छेद 346 और अनुच्छेद 347 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, किसी राज्य का विधान-मंडल, विधि द्वारा, उस राज्य में प्रयोग होने वाली भाषाओं में से किसी एक या अधिक भाषाओं को या हिंदी को उस राज्य के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा या भाषाओं के रूप में अंगीकार कर सकेगा:
परंतु जब तक राज्य का विधान-मंडल, विधि द्वारा, अन्यथा उपबंध न करे तब तक राज्य के भीतर उन शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका इस संविधान के प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था।

अनुच्छेद 346 : एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा—

संघ में शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने के लिए तत्समय प्राधिकृत भाषा, एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच तथा किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा होगी।
परंतु यदि दो या अधिक राज्य यह करार करते हैं कि उन राज्यों के बीच पत्रादि की राजभाषा हिंदी भाषा होगी तो ऐसे पत्रादि के लिए उस भाषा का प्रयोग किया जा सकेगा।

अनुच्छेद 347: किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध—

यदि इस निमित्त मांग किए जाने पर राष्ट्रपति का यह समाधान हो जाता है कि किसी राज्य की जनसंख्या का पर्याप्त भाग यह चाहता है कि उसके द्वारा बोली जाने वाली भाषा को राज्य द्वारा मान्यता दी जाए तो वह निदेश दे सकेगा कि ऐसी भाषा को भी उस राज्य में सर्वत्र या उसके किसी भाग में ऐसे प्रयोजन के लिए, जो वह विनिर्दिष्ट करे, शासकीय मान्यता दी जाए।

अध्याय 3 - उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों आदि की भाषा -

अनुच्छेद 348: उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में और अधिनियमों, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा-

1. इस भाग के पूर्वगामी उपबंधों में किसी बात के होते हुए भी, जब तक संसद् विधि द्वारा अन्यथा
उपबंध न करे तब तक--
a. उच्चतम न्यायालय और प्रत्येक उच्च न्यायालय में सभी कार्यवाहियां अंग्रेजी भाषा में होंगी,
i. संसद् के प्रत्येक सदन या किसी राज्य के विधान-मंडल के सदन या प्रत्येक सदन में पुरःस्थापित किए जाने वाले सभी विधेयकों या प्रस्तावित किए जाने वाले उनके संशोधनों के,
ii. संसद या किसी राज्य के विधान-मंडल द्वारा पारित सभी अधिनियमों के और राष्ट्रपति या किसी राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित सभी अध्यादेशों के ,और
iii. इस संविधान के अधीन अथवा संसद या किसी राज्य के विधान-मंडल द्वारा बनाई गई किसी विधि के अधीन निकाले गए या बनाए गए सभी आदेशों, नियमों, विनियमों और उपविधियों के, प्राधिकृत पाठ अंग्रेजी भाषा में होंगे।

2. खंड(1) के उपखंड (क) में किसी बात के होते हुए भी, किसी राज्य का राज्यपाल राष्ट्रपति की पूर्व सहमति से उस उच्च न्यायालय की कार्यवाहियों में, जिसका मुख्य स्थान उस राज्य में है, हिन्दी भाषा का या उस राज्य के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाली किसी अन्य भाषा का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा:
परंतु इस खंड की कोई बात ऐसे उच्च न्यायालय द्वारा दिए गए किसी निर्णय, डिक्री या आदेश को लागू नहीं होगी।

3. खंड (1) के उपखंड (ख) में किसी बात के होते हुए भी, जहां किसी राज्य के विधान-मंडल ने,उस विधान-मंडल में पुरःस्थापित विधेयकों या उसके द्वारा पारित अधिनियमों में अथवा उस राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित अध्यादेशों में अथवा उस उपखंड के पैरा (iv) में निर्दिष्ट किसी आदेश, नियम, विनियम या उपविधि में प्रयोग के लिए अंग्रेजी भाषा से भिन्न कोई भाषा विहित की है वहां उस राज्य के राजपत्र में उस राज्य के राज्यपाल के प्राधिकार से प्रकाशित अंग्रेजी भाषा में उसका अनुवाद इस अनुच्छेद के अधीन उसका अंग्रेजी भाषा में प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा।

अनुच्छेद 349: भाषा से संबंधित कुछ विधियां अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया—

इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि के दौरान, अनुच्छेद 348 के खंड (1) में उल्लिखित किसी प्रयोजन के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा के लिए उपबंध करने वाला कोई विधेयक या संशोधन संसद के किसी सदन में राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी के बिना पुरःस्थापित या प्रस्तावित नहीं किया जाएगा और राष्ट्रपति किसी ऐसे विधेयक को पुरःस्थापित या किसी ऐसे संशोधन को प्रस्तावित किए जाने की मंजूरी अनुच्छेद 344 के खंड (1) के अधीन गठित आयोग की सिफारिशों पर और उस अनुच्छेद के खंड (4) के अधीन गठित समिति के प्रतिवेदन पर विचार करने के पश्चात् ही देगा, अन्यथा नहीं।

अध्याय 4 - विशेष निदेश

अनुच्छेद 350 : व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा--
प्रत्येक व्यक्ति किसी व्यथा के निवारण के लिए संघ या राज्य के किसी अधिकारी या प्राधिकारी को, यथास्थिति, संघ में या राज्य में प्रयोग होने वाली किसी भाषा में अभ्यावेदन देने का हकदार होगा।

अनुच्छेद 350 क : प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएं-
प्रत्येक राज्य और राज्य के भीतर प्रत्येक स्थानीय प्राधिकारी भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के बालकों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की पर्याप्त सुविधाओं की व्यवस्था करने का प्रयास करेगा और राष्ट्रपति किसी राज्य को ऐसे निदेश दे सकेगा जो वह ऐसी सुविधाओं का उपबंध सुनिश्चित कराने के लिए आवश्यक या उचित समझता है।

अनुच्छेद 350 ख : भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए विशेष अधिकारी-
1. भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए एक विशेष अधिकारी होगा जिसे राष्ट्रपति नियुक्त करेगा।
2. विशेष अधिकारी का यह कर्तव्य होगा कि वह इस संविधान के अधीन भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए उपबंधित रक्षोपायों से संबंधित सभी विषयों का अन्वेषण करे और उन विषयों के संबंध में ऐसे अंतरालों पर जो राष्ट्रपति निर्दिष्ट करे, राष्ट्रपति को प्रतिवेदन दे और राष्ट्रपति ऐसे सभी प्रतिवेदनों को संसद् के प्रत्येक सदन के समक्ष रखवाएगा और संबंधित राज्यों की सरकारों को भिजवाएगा।

अनुच्छेद 351 : हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश-

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्थानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

राजभाषा हिन्दी के संवैधानिक प्रावधान

1	भारत सरकार की राजभाषा क्या है? What is the Official Language of Union of India?	**देवनागरी लिपि में हिन्दी** **Hindi in Devanagari Script**
2	भारत सरकार के प्रशासनिक प्रयोजनों के लिए अंकों के किस रूप का प्रयोग किया जाना है? Which form of numerals are to be used for official purposes of the Union?	**भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप** **International form of Indian numerals**
3	भारत सरकार के प्रशासनिक प्रयोजनों के लिए अंकों के किस रूप का प्रयोग किया जाना है? Which form of numerals are to be used for official purposes of the Union?	**भाग XVII** **Part XVII**
4	संविधान का भाग XVII संसद में किस तारीख को पारित किया गया था? On which date Part XVII of the Constitution was passed in Parliament?	**14.09.1949**
5	संविधान के भाग XVII में कितने अध्याय हैं? How many chapters are there in Part XVII of the Constitution?	**4 अध्याय** **4 Chapters**
6	संविधान के भाग XVII में कितने अध्याय हैं? How many chapters are there in Part XVII of the Constitution?	**9 अनुच्छेद** **9 Articles**
7	संविधान के भाग XVII के अंतर्गत शामिल सभी नौ अनुच्छेद कौन से हैं? What are all the nine Articles covered under Part XVII of the Constitution?	**अनुच्छेद 343 से 351** **Article 343 to 351**
8	संविधान के किस भाग और किस अनुच्छेद में संसद में कार्य संचालन के लिए प्रयुक्त की जाने वाली भाषा के संबंध में प्रावधान मौजूद है? In which part and in which article of the constitution the provision regarding the language to be used for transaction of business in Parliament exists?	**भाग V का अनुच्छेद 120** **Article 120 of Part V**

9	संविधान के किस भाग और किस अनुच्छेद में राज्य विधान मंडलों में कार्य संचालन के लिए प्रयुक्त की जाने वाली भाषा के संबंध में प्रावधान है? In which part and in which article of the constitution the provision regarding the language to be used for the transaction of business in State Legislatures exists?	**भाग VI का अनुच्छेद 210** **Article 210 of Part VI**
10	संविधान के किस अनुच्छेद में न्यायालयों आदि में प्रयुक्त की जाने वाली भाषा के संबंध में प्रावधान है? Which article of the constitution contains a provision regarding the language to be used in courts etc.?	**अनुच्छेद 348 और 349** **Article 348 & 349**
11	संविधान के किस अनुच्छेद में भारत संघ की आधिकारिक भाषा के संबंध में प्रावधान है? Which article of the constitution contains a provision regarding the official language of Union of India?	**अनुच्छेद 343 और 344** **Article 343 & 344**
12	संविधान के किस अनुच्छेद में राज्यों की आधिकारिक भाषा के संबंध में प्रावधान है? Which article of the constitution contains a provision regarding the official language of States?	**अनुच्छेद 345** **Article 345**
13	संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार हिंदी कब भारत संघ की आधिकारिक भाषा बन गई? As per Article 343(1) of the constitution when Hindi became the official language of the Union of India?	**26.01.1965**
14	संविधान के उन अनुच्छेदों के नाम बताइए जिनके प्रावधानों में संविधान की आठवीं अनुसूची का संदर्भ है? Name the articles of the constitution which in their provisions contain a reference to Eighth Schedule of the constitution?	**अनुच्छेद 344(1) और 351** **Article 344(1) & 351**
15	संविधान के किस भाग में अनुच्छेद 343-351, जो राजभाषा के बारे में जानकारी देते हैं, उपलब्ध हैं? In which part of the constitution are the articles 343-351, that gives information about Official Language available?	**भाग XVII (सत्रहवें भाग में)** **Part XVII** **(In the Seventeenth Part)**
16	वर्तमान में संविधान की आठवीं अनुसूची में कितनी भाषाएँ सूचीबद्ध हैं? At present how many languages are enlisted in the Eighth Schedule of the Constitution?	**बाईस** **Twenty-two**
17	जब संविधान को अपनाया गया था, तो आरंभ में आठवीं अनुसूची में कितनी भाषाएँ शामिल की गई थीं? When the Constitution was adopted, how many languages were included in the Eighth Schedule initially?	**चौदह** **Fourteen**
18	मैथिली, बोडो, डोगरी और संथाली को किस वर्ष आठवीं अनुसूची में जोड़ा गया? In which year Maithili, Bodo, Dogri and Santhali were added to the Eighth Schedule later?	**2003**
19	सिंधी भाषा को आठवीं अनुसूची में किस वर्ष जोड़ा गया? In which year Sindhi was added to the Eighth Schedule?	**1967**

20	नेपाली, कोंकणी और मणिपुरी को किस वर्ष 8वीं अनुसूची में जोड़ा गया? In which year Nepali, Konkani & Manipuri were added to the 8th Schedule?	**1992**
21	8वीं अनुसूची में कौन सी विदेशी भाषा शामिल है? Which one is the foreign language included in the 8th Schedule?	**नेपाली** **Nepali**
22	अरुणाचल प्रदेश की राजभाषा कौन सी है? Which is the Official Language of Arunachal Pradesh?	**अंग्रेजी** **English**
23	राजभाषा अधिनियम 1963 कब पारित किया गया? When was Official Language Act 1963 passed?	**10.05.1963**
24	राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) कब लागू हुई? When did the section 3(3) of the Official Language Act take effect?	**26 जनवरी 1965** **26 January 1965**
25	राजभाषा अधिनियम, 1963 में कब संशोधन किया गया? When was the Official Language Act, 1963 was amended?	**1967**
26	वर्ष 1967 में संशोधित राजभाषा अधिनियम 1963 में कितनी धाराएँ हैं? How many sections are there in the Official Language Act 1963, as amended in the year 1967?	**9 धाराएँ** **9 Sections**
27	राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 7 किससे संबंधित है? With which section 7 of Official Language Act,1963 is concerned?	**इसका उद्देश्य उच्च न्यायालयों में निर्णय देते समय हिन्दी या अन्य राजभाषा के वैकल्पिक प्रयोग से है।** **It is concerned with optional use of Hindi or other Official Language in Judgements in High Courts.**
28	राजभाषा अधिनियम 1963 क्यों पारित किया गया? Why was the Official Languages Act 1963 passed?	**1965 के बाद भी हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखने के संबंध में प्रावधान करने के लिए** **For making provision regarding continued use of English along with Hindi even after 1965**
29	संसद द्वारा राजभाषा पर संकल्प कब पारित किया गया? When was Resolution on Official Language passed by Parliament?	**18.01.1968**
30	राजभाषा नियम कब पारित किये गये? When was Official Languages Rules passed?	**1976**
31	राजभाषा नियमों में संशोधन कब किया गया? When Official Languages Rules was amended?	**1987**
32	राजभाषा नियमों के अनुसार भारतीय राज्यों को कितने क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है? Into how many Regions Indian states have been classified, according to Official Languages Rules?	**तीन क्षेत्रों में** **Three Regions**

33	राजभाषा नियमों के अंतर्गत वर्गीकृत 3 क्षेत्र कौन से हैं? What are the 3 Regions classified under Official Languages Rules?	**क , ख और ग क्षेत्र** **A, B & C Region**
34	क्षेत्र 'क ' में कितने राज्य और केंद्र शासित प्रदेश हैं? How many States and Union Territories are there in Region 'A'?	**9 राज्य और 1 राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली, 1 केंद्र शासित प्रदेश** **9 States & 1 NCT Delhi, 1 Union Territory.**
35	हर वर्ष "हिन्दी दिवस" कब मनाया जाता है? When is "Hindi Day" celebrated every year?	**14 सितंबर** **14th September**
36	क्षेत्र 'क ' के अंतर्गत कौन से राज्य आते हैं? Which are the states that come under Region 'A'?	**राज्य: (i) उत्तर प्रदेश (ii) उत्तरांचल (iii) बिहार (iv) झारखंड (v) हरियाणा** **(vi)हिमाचल प्रदेश (vii)मध्य प्रदेश (viii)छत्तीसगढ़** **(ix) राजस्थान** **States : (i) Uttar Pradesh (ii) Uttaranchal (iii) Bihar (iv)Jharkhand (v) Haryana** **(vi)Himachal Pradesh (vii)Madhya Pradesh (viii)Chhattisgarh** **(ix) Rajasthan** **केंद्र शासित प्रदेश: (i) अंडमान और निकोबार द्वीप समूह**
37	क्षेत्र 'ख ' के अंतर्गत कौन से राज्य आते हैं? Which are the states that come under Region 'B'?	**राज्य: (i) महाराष्ट्र (ii) गुजरात (iii) पंजाब** **केंद्र शासित प्रदेश: (i) चंडीगढ़ (ii) दमन और दीव और (iii) दादर और नगर हवेली** **States: (i) Maharashtra (ii) Gujarat (iii) Punjab** **Union Territory: (i) Chandigarh (ii) Daman and Diu and** **(iii) Dadar and Nagar Haveli**
38	क्षेत्र 'ग ' के अंतर्गत कौन से राज्य आते हैं? Which are the states that come under Region 'C'?	**राज्य: (i) कर्नाटक (ii) तमिलनाडु (iii) केरल (iv) आंध्र प्रदेश (v) तेलंगाना (vi) ओडिशा (vii) पश्चिम बंगाल (viii) गोवा (ix) जम्मू और** **कश्मीर (x) असम (xi) नागालैंड (xii) मेघालय (xiii) अरुणाचल प्रदेश (xiv) सिक्किम (xv) त्रिपुरा (xvi) मिजोरम (xvii) मणिपुर** **केंद्र शासित प्रदेश: (i) पुडुचेरी (ii) लक्षद्वीप** **States: (i) Karnataka (ii) Tamilnadu (iii) Kerala (iv) Andhra Pradesh (v)** **Telangana (vi) Odisha (vii)West Bengal (viii)Goa (ix)Jammu and** **Kashmir (x) Assam (xi) Nagaland (xii) Meghalaya (xiii) Arunachal** **Pradesh (xiv) Sikkim (xv) Tripura (xvi)Mizoram (xvii) Manipur** **Union Territory: (i) Puducherry (ii) Lakshadweep**

39	राजभाषा अधिनियम एवं नियमों के प्रावधानों के अनुपालन के लिए कौन जिम्मेदार है? Who is responsible for the compliance of provisions of Official Languages Act and rules?	**प्रत्येक केंद्रीय सरकारी कार्यालय का प्रशासनिक प्रमुख** **Administrative Head of each Central Government Office**
40	राजभाषा से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णय कौन सा मंत्रालय लेता है? Which Ministry takes important decisions pertaining to Official Language?	**गृह मंत्रालय** **Ministry of Home Affairs**
41	राजभाषा नियमों के अनुसार, तमिलनाडु किस क्षेत्र के अंतर्गत आता है? According to Official Languages Rules, Tamilnadu falls under which region?	**क्षेत्र 'ग'** **Region 'C'**
42	राजभाषा नियमों के अनुसार, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह किस क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं? According to Official Languages Rules, Andaman & Nicobar Islands fall under which region?	**क्षेत्र ' क '** **Region 'A'**
43	क्षेत्र "ख " के अंतर्गत वर्गीकृत केंद्र शासित प्रदेश कौन से हैं? Which are the Union Territories classified under Region "B"?	**चंडीगढ़, दामन और दीव, दादर और नगर हवेली** **Chandigarh, Daman & Diu, Dadar and Nagar Haveli**
44	किन राज्यों में उर्दू को राजभाषा घोषित किया गया है? States in which Urdu has been declared as one of the Official Language?	**तेलंगाना, बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश और दिल्ली** **Telangana, Bihar, Jharkhand, Uttar Pradesh and Delhi**

महादेवी वर्मा

दिव्या एन
सहायक प्रोफेसर, फैशन संचार विभाग
राजभाषा अनुभाग प्रभारी

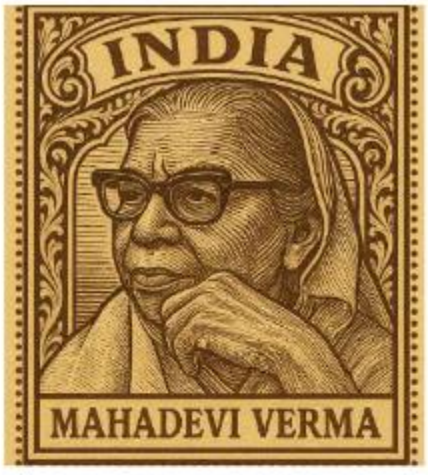

महान कवि और शिक्षक

महादेवी वर्मा (1907-1987) आधुनिक हिंदी साहित्य और भारतीय शिक्षा जगत की सबसे प्रभावशाली हस्तियों में से एक हैं। एक कवि होने के साथ-साथ, वे एक लेखिका, शिक्षिका और महिला अधिकारों की समर्थक भी थीं। उन्होंने हिंदी कविता में छायावाद (रोमांटिकतावाद) आंदोलन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और बीसवीं सदी के भारत के बौद्धिक परिदृश्य को व्यापक बनाया। उनकी रचनाएँ व्यक्तिगत गीतात्मकता, आध्यात्मिक गहराई और सामाजिक चेतना के अंतर्संबंध को दर्शाती हैं, जो उन्हें एक साहित्यिक अग्रदूत और एक समर्पित शिक्षिका, दोनों के रूप में स्थापित करती हैं।

उनका काव्यसंग्रह यामा (1940) आधुनिक हिन्दी काव्य की शिखर रचना है, जिसके लिए उन्हें 1982 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनकी अन्य काव्य कृतियों में नीहार (1930), रश्मि (1932), नीरजा (1934) और सांध्यगीत (1936) प्रमुख हैं। इन संग्रहों में प्रकृति, विरह, करुणा और आत्मान्वेषण की गहन छवियाँ मिलती हैं। वे कवयित्री मीरा से तुलना योग्य मानी जाती हैं, परन्तु उनकी अभिव्यक्ति अधिक आधुनिक और आत्मान्वेषी है।

गद्य के क्षेत्र में भी उनका योगदान अप्रतिम है। अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ और पथ के साथी जैसी कृतियों में उन्होंने संस्मरण और निबंध को नया आयाम दिया। मेरा बचपन और गिल्लू जैसी रचनाओं में बालसुलभ सरलता और संवेदनशीलता झलकती है। महादेवी वर्मा ने विशेष रूप से स्त्रियों और उपेक्षित वर्गों की पीड़ा तथा शिक्षा के महत्व को रेखांकित किया। यही कारण है कि उन्हें हिन्दी साहित्य में प्रारम्भिक स्त्रीवादी स्वर के रूप में भी देखा जाता है। प्रकृति, विशेषकर पशुओं और एकांत के प्रति उनके प्रेम ने उनके जीवन को आकार दिया।

उन्होंने शिक्षा को "समाज के हृदय" में स्थान दिया क्योंकि इसमें सरकार, समुदाय और संस्कृति में नये विचारों को प्रसारित करने की क्षमता है। उनकी मानना थी कि शिक्षा को कार्यस्थल पर सफलता के लिए छात्रों को तैयार करने के अलावा "स्व" के विकास पर भी ध्यान देना चाहिए। वे प्रयाग महिला विद्यापीठ, इलाहाबाद की प्राचार्या और बाद में कुलपति रहीं। यहाँ उन्होंने स्त्रियों की उच्च शिक्षा के लिए एक सशक्त वातावरण निर्मित किया। उनके विचार में शिक्षा केवल ज्ञानार्जन नहीं बल्कि जीवन को रूपांतरित करने की प्रक्रिया है।

उनके योगदान के लिए उन्हें पद्मभूषण (1957) और पद्मविभूषण (1988, मरणोपरांत) जैसे राष्ट्रीय अलंकरण प्रदान किए गए। यामा के लिए मिले ज्ञानपीठ पुरस्कार ने उन्हें हिन्दी साहित्य के सर्वोच्च शिखर पर स्थापित कर दिया।

एक कवि, विचारक और शिक्षिका के रूप में, महादेवी वर्मा ने साहित्य की भूमिका को व्यक्तिगत अभिव्यक्ति और सार्वजनिक दायित्व, दोनों रूपों में प्रतिबिम्बित किया। उनका योगदान आज भी गूंजता रहता है, जिससे उन्हें आधुनिक भारतीय चिंतन और रचनात्मकता की आधारशिला के रूप में स्थान प्राप्त हुआ है।

राजभाषा की हीरक जयंती का स्मरण डाक टिकट के साथ

दिव्या एन
सहायक प्रोफेसर, फैशन संचार विभाग
राजभाषा अनुभाग प्रभारी

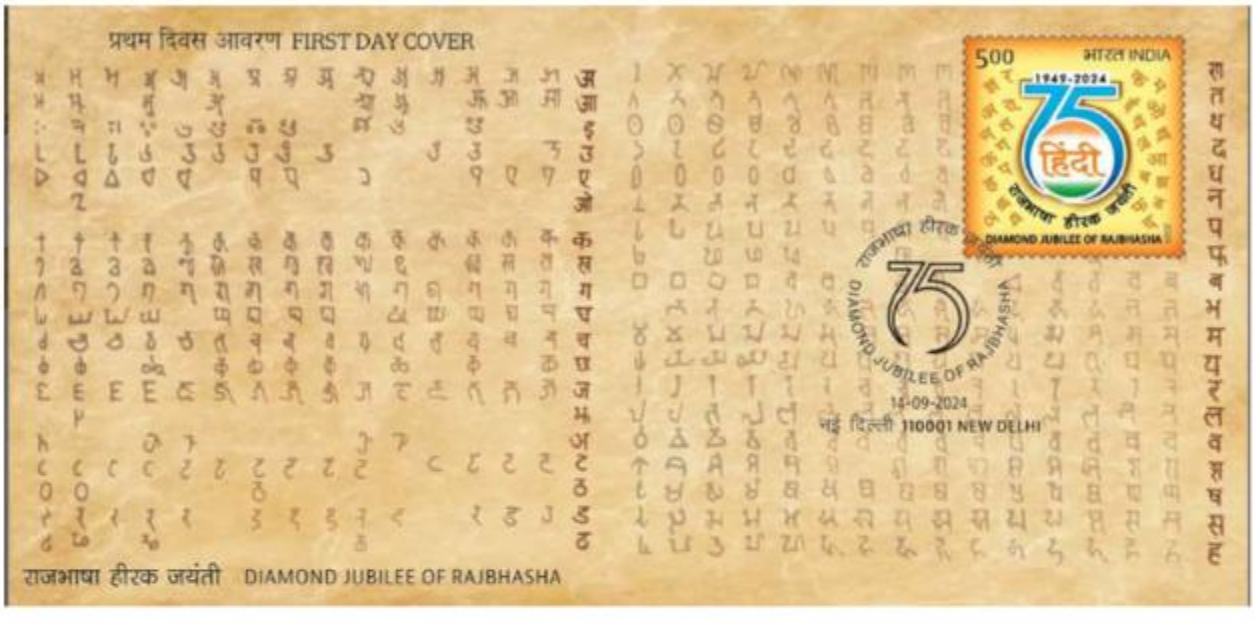

14 सितंबर 2024 को राजभाषा हिंदी की हीरक जयंती मनाई गई। 75 वर्ष पूर्व, इसी दिन हिंदी को भारत की राजभाषा चुना गया था। इस अवसर पर, भारतीय डाक विभाग द्वारा विशेष रूप से प्रथम दिवस आवरण और डाक टिकट जारी किया गया था। ये डाक टिकट हिंदी की एक क्षेत्रीय भाषा से राष्ट्रीय अस्मिता और एकता के प्रतीक बनने की यात्रा को दर्शाते हैं।

यह डाक टिकट, जो अब एक ऐतिहासिक कलाकृति बन गया है, हिंदी के प्रचार-प्रसार में राष्ट्र की प्रगति का प्रतीक है। इसके अलावा, भाषाई सामंजस्य के एक साधन के रूप में, यह भारत की पहचान को आकार देने में सभी क्षेत्रीय भाषाओं के महत्व को भी स्वीकार करता है।

भारत सरकार ने इस उत्सव को चिह्नित करने के लिए ₹75 का एक स्मारक सिक्का भी जारी किया। क्वाटरनरी मिश्र धातु से बने इस सिक्के का वज़न 35 ग्राम और व्यास 44 मिमी है। इसके अग्रभाग पर सिंह का शीर्ष, भारतीय मुद्रा का चिह्न और मूल्य, साथ ही "भारत", "इंडिया" और "सत्यमेव जयते" अंकित हैं। पृष्ठभाग पर एक वृक्ष की छवि, हिंदी वर्णमाला, वर्ष 1949-2024, और 14 सितंबर की तिथि अंकित है।

हिन्दी पखवाड़ा समारोह रिपोर्ट

13 – 27 सितम्बर, 2024

निफ्ट चेन्नै कैम्पस में दिनांक 13.09.2024 से 27.09.2024 तक हिन्दी पखवाड़ा समारोह मनाया गया । सुश्री अश्मिता मोंडल, सहायक प्रोफेसर एफसी और राजभाषा अनुभाग प्रभारी (2023-25), सुश्री हेमा युवराज, सहायक प्रोफेसर एफ एंड एलए, ने हिंदी अनुवादक श्री टीवी राजेंद्रन के साथ मिलकर कार्यक्रमों का आयोजन किया। हिन्दी पखवाड़े के दौरान निम्नलिखित हिन्दी कार्यक्रम और हिन्दी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं|

10, 11 और 12 सितंबर, 2024 को हिंदी टाइपिंग प्रशिक्षण के लिए एक हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। प्रशिक्षण कार्यशाला में 37 कर्मचारियों ने भाग लिया। गूगल इनपुट टूल्स का उपयोग करके फोनेटिक मोड में कंप्यूटर पर हिंदी टाइपिंग प्रशिक्षण आयोजित किया गया। श्री टी वी राजेंद्रन, हिंदी अनुवादक, निफ्ट चेन्नई ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन किया।

हिन्दी पखवाड़ा समारोह

क्रं सं.	प्रतियोगिता / कार्यक्रम	दिनांक & समय	प्रतिभागी
1	हिन्दी कार्यशाला	10.09.2024, 11.09.2024 और 12.09.2024 अपराह्न 1.00 से 2.30 तक	संकाय सदस्य, अधिकारी और कर्मचारी
2	हिन्दी टंकण प्रतियोगिता (कंप्यूटर में)	16.09.2024 (सोमवार) मध्याह्न 12.00 से 2.00 तक	
3	हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूपण प्रतियोगिता	18.09.2024 (बुधवार) मध्याह्न 12.00 से 2.00 तक	
4	हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता विषय : 1. जलवायु परिवर्तन और भारत 2. श्रीनगर / कश्मीर की यादें 3. फ़ैशन के क्षेत्र में भारतीय शिल्पकारों का महत्व • 1000 शब्दों में निबंध लिखें. • परीक्षा के समय दो विषय दिए जाएंगे। लिखने के लिए एक चुनें • समय सीमा 1 घंटा	19.09.2024 (गुरुवार) अपराह्न 12.30 से 1.00 तक	
5	हिन्दी कविता प्रतियोगिता विषय: 1. शहर की धड़कन 2. प्रेरणा और उम्मीद 3. खुशियों और शोक का सफर (उपर्युक्त में से दो विषयों की घोषणा परीक्षा के समय की जाएगी)	20.09.2024 (शुक्रवार) अपराह्न 1.00 से 2.00 तक	केवल छात्रों के लिए
6	हिन्दी श्रुतलेखन प्रतियोगिता (केवल एम टी एस के लिए)	23.09.2024 (सोमवार) अपराह्न 3.00 से 4.00 तक	केवल एम टी एस के लिए
7	हिन्दी अनुवाद एवं भाषा ज्ञान प्रतियोगिता	23.09.2024 (सोमवार) अपराह्न 1.00 से 2.00 तक	संकाय सदस्य, अधिकारी और कर्मचारी
	समापन कार्यक्रम	27.09.2024(शुक्रवार) पूर्वाह्न 11.45 से 1.15 तक	सब

हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विवरण निम्नानुसार है :

1. दिनांक 16.09.024 को आयोजित हिंदी टंकण प्रतियोगिता (संकाय, अधिकारी एवं कर्मचारियों के लिए)

क्रं सं.	नाम	पदनाम	पुरस्कार	पुरस्कार राशि
1	सुश्री एम. सरण्या	कनिष्ठ सहायक	प्रथम	3000/-
2	सुश्री दिव्या के. वी.	सहायक प्रोफेसर	द्वितीय	2000/-
3	सुश्री टी. शिवशक्ति	कनिष्ठ सहायक	तृतीय	1500/-
4	सुश्री एस. धनलक्ष्मी	प्रयोगशाला सहायक	सांत्वना	700/-

2. दिनांक 18.09.024 को आयोजित हिंदी टिप्पण एवं प्रारूपण प्रतियोगिता (संकाय, अधिकारी एवं कर्मचारियों के लिए)

क्रं सं.	प्रतिभागी क नाम	पदनाम	पुरस्कार	पुरस्कार राशि रु.
1	सुश्री एस. धनलक्ष्मी	प्रयोगशाला सहायक	प्रथम	3000/-
2	श्री आर. रामानन्दा	वरिष्ठ सहायक	द्वितीय	2000/-
3	सुश्री के. एस. शशिरेखा	सहायक	तृतीय	1500/-
4	सुश्री आर. रबेक्का वसन्ता राणी	सहायक	सांत्वना	700/-
5	सुश्री आर. राधा	सहायक	सांत्वना	700/-

3. दिनांक 19.09.024 को आयोजित हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता (संकाय, अधिकारी एवं कर्मचारियों के लिए)

क्रं सं.	प्रतिभागी क नाम	पदनाम	पुरस्कार	पुरस्कार राशि रु.
1	श्री श्रीधर आमंची	एसोसिएट प्रोफेसर	प्रथम	3000/-
2	श्री तोमस सैमुएल	सहायक प्रोफेसर	द्वितीय	2000/-
3	श्री शंकरनारायणन	एसोसिएट प्रोफेसर	तृतीय	1500/-
4	श्री एस. सेंतिल्वेल	एसोसिएट प्रोफेसर	सांत्वना	700/-

4. दिनांक 20.09.024 को आयोजित हिन्दी कविता प्रतियोगिता (केवल छात्रों के लिए)

क्रं सं	प्रतिभागी क नाम	विभाग	पुरस्कार	पुरस्कार राशि रु.
1	सुश्री शाश्वती दीक्षित	एडी - 3	प्रथम	3000/-
2	श्री स्वयंबित साहू	बी एफ टी -7	द्वितीय	2000/-
3	श्री ईश्वर कुमार	के डी - 7	तृतीय	1500/-
4	सुश्री हीबा सय्यद	एल डी - 3	सांत्वना	700/-

5. दिनांक 23.09.024 को आयोजित हिन्दी श्रुतलेखन प्रतियोगिता (केवल एमटीएस के लिए)

क्रं सं.	प्रतिभागी क नाम	पदनाम	पुरस्कार	पुरस्कार राशि रु.
1	श्री अरुण पिल्लै	एम टी एस	प्रथम	3000/-
2	श्री टी. मधन	एम टी एस	द्वितीय	2000/-
3	श्री बी. विजयकुमार	एम टी एस	तृतीय	1500/-
4	श्री आर. रमेश	एम टी एस	सांत्वना	700/-

6. दिनांक 23.09.024 को आयोजित हिन्दी अनुवाद एवं भाषा ज्ञान प्रतियोगिता (संकाय, अधिकारी एवं कर्मचारियों के लिए)

क्रं सं.	प्रतिभागी क नाम	पदनाम	पुरस्कार	पुरस्कार राशि रु.
1	सुश्री सरद्वति दत्ता	सहायक प्रोफेसर	प्रथम	3000/-
2	श्री आर. रामानन्दा	वरिष्ठ सहायक	द्वितीय	2000/-
3	सुश्री गीता सत्यमूर्ति	सहायक	तृतीय	1500/-
4	श्री वी. धनबाल	प्रयोगशाला सहायक	सांत्वना	700/-

इस प्रकार निफ्ट चेन्नई में हिंदी पखवाड़ा 27 सितम्बर 2024 को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। पूरे आयोजन में छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों ने उत्साह के साथ भाग लिया। विभिन्न प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों के माध्यम से सभी ने हिंदी भाषा की सुंदरता और महत्व को महसूस किया।

एआई टूल्स का उपयोग करके आसानी से हिंदी सीखें

दिव्या एन
सहायक प्रोफेसर, फैशन संचार विभाग
राजभाषा अनुभाग प्रभारी

भारत जैसे बहुभाषी कार्यस्थलों में, विशेष रूप से सरकारी कार्यालयों में, मूल हिंदी ज्ञान होना पेशेवरों के लिए एक महत्वपूर्ण लाभ बन सकता है। चूंकि हिंदी भारत की राजभाषा है, इसलिए केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए हिंदी सीखना और सरकारी कार्यों में उसका उपयोग करना आवश्यक है। पारंपरिक भाषा कक्षाएं एक ठोस आधार प्रदान कर सकती हैं, लेकिन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), विशेष रूप से जनरेटिव एआई टूल्स जैसे चैटजीपीटी, डुओलिंगो, गूगल ट्रांसलेट, गूगल लेंस, और वॉयस रिकग्निशन ऐप्स हिंदी सीखने और उपयोग करने के तरीके में क्रांति ला रहे हैं।

1) **चैट जीपीटी**:
आपका व्यक्तिगत हिंदी शिक्षक
चैट जीपीटी भाषा सीखने वालों के लिए सबसे बहुमुखी टूल्स में से एक है। आप इससे सामान्य अभिवादन, सरकारी कार्यों में प्रयोग होने वाले वाक्यांश, या ईमेल लिखने के तरीके सीख सकते हैं। यह अनुवाद कर सकता है, रोमन से देवनागरी में लिप्यंतरण कर सकता है और व्याकरण को सरल रूप में समझा सकता है।
आप चैटजीपीटी से द्विभाषी ड्राफ्ट तैयार करवाने के लिए कह सकते हैं, या किसी प्रस्तुति के लिए हिंदी-इंग्लिश स्विचिंग का अभ्यास कर सकते हैं। यह आपकी लिंग-पहचान के अनुसार शब्दों को अनुकूलित कर सकता है, जो अधिकांश अनुवाद टूल्स में नहीं होता।

आप चैटजीपीटी से अनौपचारिक हिंदी को औपचारिक हिंदी में बदलने या अपने वाक्यों को सुधारने के लिए भी कह सकते हैं।

कुछ उपयोगी प्रॉम्प्ट्स:

- सरकारी कार्यालयों में प्रयुक्त 10 औपचारिक हिंदी वाक्य सूचीबद्ध करें (DDFS नोटिंग्स हेतु)
- पाँच हिंदी वाक्य सिखाइए जो मैं रोज़मर्रा की ईमेल में उपयोग कर सकूं
- इस अनुच्छेद का औपचारिक हिंदी में अनुवाद कीजिए
- इस रिपोर्ट का 150 शब्दों में औपचारिक हिंदी में सारांश दीजिए

2) गूगल ट्रांसलेट और गूगल लेंस: त्वरित सहायता
गूगल ट्रांसलेट, जो न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन से संचालित होता है, अंग्रेज़ी से हिंदी और हिंदी से अंग्रेज़ी में दस्तावेज़ों, फॉर्मों और नोटिसों का अनुवाद करने में बेहद उपयोगी है। इसकी सहायता से आप पूरे पैराग्राफ या दस्तावेज़ का अनुवाद कर सकते हैं उच्चारण सुन सकते हैं (टेक्स्ट-टू-स्पीच) कठिन शब्दों और वाक्यांशों का संदर्भ के साथ अर्थ समझ सकते हैं। गूगल लेंस एक अन्य एआई टूल है जो मुद्रित हिंदी पाठ (जैसे बोर्ड, फॉर्म) को स्कैन कर तुरंत अनुवाद प्रदान करता है—जो फील्ड विज़िट्स या कार्यालय के दौरान तत्काल समझ में सहायक होता है।

3) **डुओलिंगो**: खेल आधारित भाषा शिक्षा जो लोग व्यवस्थित पाठों और इंटरैक्टिव अभ्यास को पसंद करते हैं, उनके लिए डुओलिंगो एक बेहतरीन एआई-आधारित ऐप है। यह छोटे-छोटे हिंदी पाठों में शब्दावली, वाक्य संरचना और उच्चारण पर ध्यान देता है। यह आपके स्तर के अनुसार पाठों को ढालता है और तुरंत प्रतिक्रिया देता है—जो व्यस्त पेशेवरों के लिए बहुत उपयोगी है। रोज़ाना के लक्ष्य निर्धारित कर आप धीरे-धीरे दक्षता बढ़ा सकते हैं, जिससे सरकारी सर्कुलर समझना या फॉर्म भरना आसान हो जाता है।

4) भाषिणी: वाणी से पाठ और अनुवाद भाषिणी जैसे ऐप न केवल वाणी को टेक्स्ट में बदलते हैं, बल्कि एक ही प्रक्रिया में उसका अनुवाद भी कर सकते हैं। आप अंग्रेज़ी या 22 भारतीय भाषाओं में बोल सकते

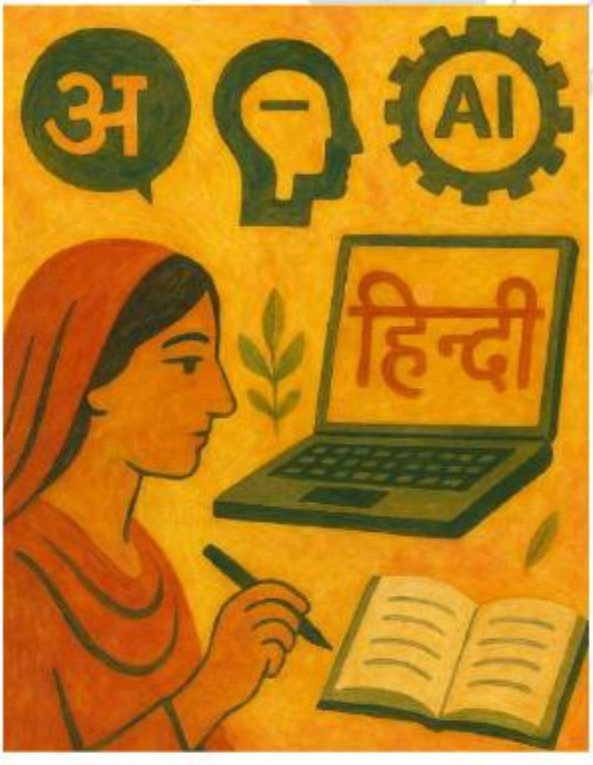

हैं और उसे हिंदी में अनुवादित करा सकते हैं। यह उन लोगों के लिए बेहद उपयोगी है जिन्हें बैठकों में हिंदी में बिंदु नोट करना या फोन कॉल्स का उत्तर देना होता है। आप टेक्स्ट को एक भाषा से दूसरी में गूगल ट्रांसलेट की तरह कॉपी-पेस्ट भी कर सकते हैं। 'रीड अलाउड' फीचर से आप संवाद अभ्यास कर सकते हैं, और 'भाषिणी अनुवाद' एक पन्ने के दस्तावेज़ों के अनुवाद के लिए उत्तम है।

निष्कर्ष: एआई टूल्स भाषा सीखने के तरीके को अधिक सुलभ, इंटरैक्टिव और व्यक्तिगत बना रहे हैं। एआई लेखन सहायक जैसे ग्रामर्ली, क्विलबॉट या भाषिणी सही व्याकरण, स्वर और शब्दावली सुनिश्चित करते हैं। ये टूल हिंदी पाठ का अनुवाद, सुधार या औपचारिक रूपांतरण कर सकते हैं, जिससे समय की बचत होती है और पेशेवर स्तर बना रहता है।
चाहे आप एक सहायक हों जो हिंदी में नोटिंग्स बना रहा हो या एक विभाग प्रमुख हों जो छात्रों और अभिभावकों से हिंदी में संवाद कर रहे हों—चैट जीपीटी, डुओलिंगो, गूगल ट्रांसलेट और भाषिणी जैसे टूल्स हिंदी के आत्मविश्वासपूर्ण उपयोग में आपकी मदद कर सकते हैं। हिंदी सीखना मुश्किल नहीं है। बस आपको जिज्ञासा, लगन और इंटरनेट से जुड़ा एक उपकरण ज़रूरी है।

निखरने की बेला

हबीबुनिसा
सहायक प्रोफेसर
निटवेयर डिज़ाइन विभाग

ऐसे बिखरी मैं जीवन के संघर्ष में,
जैसे बारिश के बिखरे मोती ।
टूट कर ऐसे तितर-बितर हुई,
जैसे वर्षा-बिंदु टकराकर बिखरी ।

गिरते बूँदों के बीच सन्नाटा,
है अवसर एक नये रूप में ढलने का ।
उलझन रहेंगे चारों ओर सदा,
मौन की घड़ी ही निखरने की बेला ।

समझे कौन वो खामोशी,
बूँदों के बीच की ।
टिप-टिप शोर सभी पहचानें,
पर कोई न समझे गहराई ।

उलझन रहेंगे चारों ओर सदा,
स्थिरता का पल ही निखरने की बेला ।
फिर समझी अनसुनी खामोशी में,
भीतर के घावों को धीरे-धीरे सहलाती गई।
क्षण है यही पुनर्जन्म का,
फिर पंख फैलाकर उड़ने लगी।

मैं वो फूल नहीं,
जो सूखकर मुरझा जाऊँ ।
गुलाब हूँ मैं सूखी-सूखी,
जो सुगंध से राहों को रोशन करती जाऊँ ।
आंधियों में खोई थी कभी,
जैसे झरने से धार खो गई कहीं ।
पर थमी नहीं तूफ़ानों से डरकर,
हर घाव में अपनी चमक समेटती रही ।

सन्नाटा चीर जब जागी प्रभा,
बिखरी उजास की निर्मल बेला ।
उलझन रहेंगे चारों ओर सदा,
विराम का पल ही निखरने की बेला ।

निफ्ट चेन्नै का हथकरघा और शिल्प उत्सव
1 - 15 अगस्त, 2024

राष्ट्रीय फ़ैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (निफ्ट), चेन्नै ने भारत की समृद्ध हथकरघा और शिल्प विरासत का एक जीवंत और बहुआयामी उत्सव आयोजित किया, जो संस्थान के हथकरघा फैशन वीक और 10वें राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के साथ मेल खाता था । यह कार्यक्रम कई दिनों और स्थानों पर फैला हुआ था, जिसमें फैशन वॉक, प्रदर्शनी, वार्ताएं और अन्य गतिविधियाँ शामिल थीं जिनका उद्देश्य भारतीय पारंपरिक शिल्पकलाओं को बढ़ावा देना था।

राष्ट्रीय हथकरघा दिवस समारोह :

हथकरघा फैशन वीक की मुख्य आकर्षण एक उत्साहपूर्ण फैशन वॉक रही, जिसमें छात्रों, संकाय सदस्यों, गैर-शिक्षण कर्मचारियों और हाउसकीपिंग स्टाफ ने पूरे जोश के साथ भाग लिया और भारत के उत्कृष्ट हथकरघा वस्त्रों का प्रदर्शन किया। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि क्राफ्ट काउंसिल ऑफ इंडिया की पूर्व संयुक्त सचिव श्रीमती जयश्री संयुक्ता थीं । संयुक्त निदेशक ने राष्ट्रीय हथकरघा दिवस समारोह का संचालन किया, जिसमें एक पुरस्कार वितरण समारोह भी शामिल था। प्रदर्शनी सह बिक्री एवं कारीगर सहभागिता :

दो दिवसीय प्रदर्शनी और बिक्री का आयोजन इन्नर कॉर्टयार्ड में किया गया, जिसमें विभिन्न समूहों से नौ कारीगरों ने भाग लिया। इसमें शामिल थे:
अनाकापुत्तूर प्राकृतिक फाइबर क्लस्टर (हथकरघा)
टोड़ा कढ़ाई (हस्तशिल्प)
सेलम वेण्पट्टु (हथकरघा)
पुलिक्काट पाम लीफ क्राफ्ट (हस्तशिल्प)
प्रदर्शनी में कुल ₹60,149/- की बिक्री दर्ज की गयी।

विशेषज्ञ वार्ता और पुरस्कार विजेता फिल्म की स्क्रीनिंग :

पोरगई आर्टिज़ान्स एसोसिएशन की डॉ. ललिता रेगी द्वारा एक प्रेरणादायक भाषण का आयोजन ऑडिटोरियम में किया गया ।

यह संस्था लांबाड़ी समुदाय की पारंपरिक हस्तकढ़ाई को पुनर्जीवित करने के लिए समर्पित है । छात्रों ने डॉ. रेगी के साथ एक संवादात्मक प्रश्नोत्तर सत्र में भाग लिया। इसके अतिरिक्त, कारीगरों के कार्य को गहराई से दर्शाने वाली पुरस्कार विजेता पोरगई फिल्म की स्क्रीनिंग भी की गई।

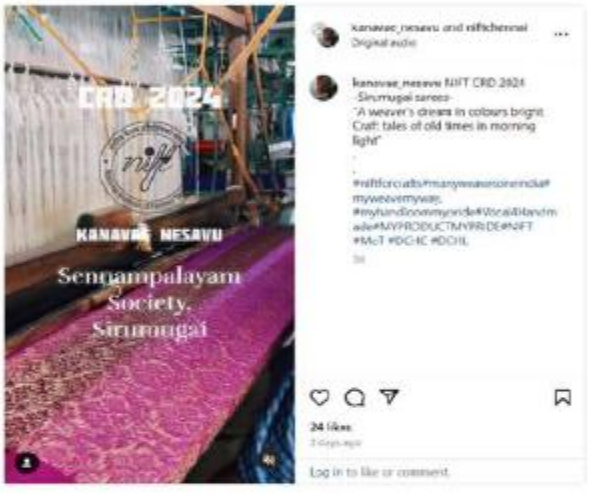

सोशल मीडिया और शिल्प संवर्धन :

हथकरघा और शिल्प उत्सव की पहुंच को और व्यापक बनाने के लिए, हथकरघा और हस्तशिल्प पर आधारित विभिन्न रील्स और वीडियो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर साझा किए गए इनमें
#niftforcrafts,
#manyweavesoneindia,
#myweavemyway,
#myhandloommypride,
#Vocal4Handmade
#MYPRODUCTMYPRIDE
जैसे हैशटैग का उपयोग किया गया । छात्रों को सोशल मीडिया पर हथकरघा के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए सेल्फी स्टोरी कैंपेन में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया ।

पोक्किशम : क्राफ्ट बाज़ार 2025

राष्ट्रीय फ़ैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (निफ्ट), चेन्नै द्वारा “पोक्किशम – क्राफ्ट बाज़ार 2025” का आयोजन पारंपरिक भारतीय हस्तशिल्प की समृद्ध विरासत को सम्मानित करने के उद्देश्य से किया गया। यह दो दिवसीय कार्यक्रम **28 फरवरी**, 2025 को दोपहर 1:00 बजे से शाम 7:00 बजे तक और 1 मार्च, 2025 को सुबह 10:00 बजे से शाम 7:00 बजे तक आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 18 विभिन्न शिल्प समूहों ने भाग लिया, जिन्होंने अपने-अपने पारंपरिक हस्तनिर्मित उत्पादों का प्रदर्शन और विक्रय किया।

बाज़ार का उद्घाटन 28 फरवरी 2025 को सुबह 11:00 बजे श्री सी. मुत्तुमणि, निदेशक, साउथ ज़ोन, वीवर्स सर्विस सेंटर, चेन्नै द्वारा निफ्ट परिसर, चेन्नै में किया गया। उनके आगमन ने कार्यक्रम को विशेष गरिमा प्रदान की और भारत के पारंपरिक शिल्प व कारीगरों के समर्थन के महत्व को रेखांकित किया।

"पोक्किशम", जिसका अर्थ तमिल में "खज़ाना" है, इस आयोजन की भावना को सटीक रूप से दर्शाता है – यह भारत की पारंपरिक कलाओं में समाहित अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर को सम्मान देने का प्रयास था। यह बाज़ार न केवल आर्थिक आदान-प्रदान का मंच था, बल्कि कारीगरों, विद्यार्थियों, शिक्षकों और शिल्प प्रेमियों के बीच ज्ञान और संस्कृति के आदान-प्रदान का भी अवसर बना।

हस्तशिल्प प्रदर्शन - निफ्ट चेन्नै के विभिन्न विभागों द्वारा हस्तशिल्प प्रदर्शन उत्साहपूर्वक आयोजित किए गए। ये प्रदर्शन कुशल शिल्पकारों के सहयोग से संपन्न हुए, जिनके माध्यम से छात्रों को पारंपरिक हस्तशिल्प तकनीकों का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हुआ, जो उनके शैक्षणिक पाठ्यक्रम में एकीकृत हैं।

लेदर डिज़ाइन – "हस्तनिर्मित डिज़ाइन तकनीक" विषय के अंतर्गत "हैंडमेड बैग में लेदर एंबॉसिंग और लेसिंग" पर एक हस्तशिल्प प्रदर्शन श्री वेल्लिक्कन्नु द्वारा 03.03.2025 को लेदर डिज़ाइन विभाग के सेमेस्टर 4 के छात्रों के लिए आयोजित

निटवियर डिज़ाइन – आरी कढ़ाई (महाबलीपुरम) के कारीगरों के साथ एक हस्तशिल्प प्रदर्शन कार्यशाला का आयोजन 03.03.2025 को सेमेस्टर 4 के छात्रों के लिए किया गया।

सामग्री और पैटर्न

कढ़ाई विशेषज्ञ निफ्ट चेन्नई के छात्रों को कढ़ाई का प्रदर्शन और प्रशिक्षण देते हुए।

फैशन एवं लाइफस्टाइल एक्सेसरीज़ डिज़ाइन – एडी-चतुर्थ सेमेस्टर के छात्रों के लिए 10.03.2025 से 12.03.2025 तक तीन दिन क्राफ्ट डेमोंस्ट्रेशन कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला के लिए पुलिक्काट, तमिलनाडु से कारीगर सुश्री कोकिला वी को आमंत्रित किया गया था।

शिल्पकार जागरूकता कार्यशाला, क्राफ्ट बाज़ार और हस्तशिल्प प्रदर्शन - 2025

शिल्पकार जागरूकता कार्यशाला :

शिल्पकार जागरूकता कार्यशाला (AAW) का सफलतापूर्वक आयोजन 27 और 28 फरवरी 2025 को किया गया, जिसे सीआईसी (CIC) और सभी स्नातक विभागों के पाठ्यक्रम समन्वयकों (CCs) के समन्वय में आयोजित किया गया। इस कार्यशाला में विभिन्न शिल्प समूहों से आए 13 शिल्पकारों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्देश्य शिल्पकारों को सरकारी सहायता योजनाओं, डिजिटल मार्केटिंग उपकरणों, और डिज़ाइन नवाचार मंचों के प्रति जागरूक करना था।

27/02/2025: सत्र - 1

विषय: तमिलनाडु में कुटीर एवं शिल्प उत्पाद निर्माण के लिए सरकारी योजनाओं और सब्सिडी की जानकारी

वक्ता: श्री सेंथिल कुमार, संयुक्त निदेशक, एमएसएमई इस सत्र में श्री सेंथिल कुमार ने तमिलनाडु में कुटीर उद्योगों और शिल्प उत्पादों के निर्माण हेतु उपलब्ध विभिन्न सरकारी योजनाओं और सब्सिडी की विस्तारपूर्वक जानकारी दी। कार्यशाला का उद्देश्य शिल्पकारों को सरकार द्वारा दी जाने वाली वित्तीय सहायता और विकासात्मक समर्थन के बारे में जागरूक करना था।

27/02/2025: सत्र - 2

विषय: डिजिटल मार्केटिंग और प्रचार-प्रसार हेतु इंस्टाग्राम पेज बनाना

वक्ता: श्री उदय राज, सहायक प्रोफेसर एवं पाठ्यक्रम समन्वयक – फैशन एवं लाइफस्टाइल एक्सेसरीज़ (F&LA) इस सत्र में श्री उदय राज ने शिल्पकारों को डिजिटल मार्केटिंग के महत्व से अवगत कराते हुए इंस्टाग्राम

पेज बनाने की प्रक्रिया का व्यावहारिक परिचय दिया। उन्होंने यह बताया कि किस प्रकार सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स का उपयोग कर अपने उत्पादों को व्यापक स्तर पर दर्शकों तक पहुँचाया जा सकता है और ऑनलाइन प्रचार-प्रसार को प्रभावी बनाया सकता है।

27/02/2025: सत्र - 3

विषय: विज़ननेक्स्ट (Visionxt)
वक्ता: श्री किशोर कुमार, सुश्री हरिनी श्रीनिवास एवं सुश्री चैतरी पटेल – विज़ननेक्स्ट टीम से इस सत्र में विज़ननेक्स्ट टीम के सदस्यों ने अपने प्लेटफॉर्म "Visionxt" की अवधारणा, उद्देश्यों और शिल्प क्षेत्र में इसकी संभावनाओं पर विस्तृत जानकारी साझा की। उन्होंने यह बताया कि कैसे यह प्लेटफॉर्म शिल्पकारों और डिज़ाइन पेशेवरों को आपस में जोड़ने, नवाचार को बढ़ावा देने और पारंपरिक शिल्प को समकालीन बाज़ार से जोड़ने में सहायक बन सकता है।

27/02/2025: सत्र - 4

विषय: शिल्पकारों के बच्चों के प्रवेश संबंधी विवरण
वक्ता: डॉ. गीता रंजिनी, एसोसिएट प्रोफेसर एवं लिंक सी ए सी इस सत्र में डॉ. गीता रंजिनी ने शिल्पकारों के बच्चों के लिए निफ्ट में उपलब्ध प्रवेश प्रक्रियाओं, पात्रता मानदंडों तथा आरक्षण और सहायता योजनाओं की जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि किस प्रकार संस्थान शिल्प समुदाय से आने वाले विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करता है और उनके करियर निर्माण में सहायता करता

28/02/2025: सत्र - 5

विषय: अपने शिल्प से एक ब्रांड कैसे बनाएं ?
वक्ता: सुश्री हेमामालिनी पद्मनाभन, सीईओ – सेवन साड़ीज़ इस सत्र में सुश्री हेमामालिनी पद्मनाभन ने शिल्पकारों को यह मार्गदर्शन दिया कि वे अपने पारंपरिक शिल्प को एक विशिष्ट और सफल ब्रांड में कैसे बदल सकते हैं। उन्होंने ब्रांड निर्माण की प्रक्रिया, उत्पाद की कहानी (brand story), लक्ष्य बाज़ार की पहचान, गुणवत्ता बनाए रखना, और डिजिटल माध्यमों के ज़रिए विपणन रणनीतियों पर विस्तार से चर्चा की। इस प्रेरणादायक सत्र ने शिल्पकारों को अपनी पहचान को व्यावसायिक सफलता में बदलने के लिए प्रेरित किया।

खादी महोत्सव - 2024

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (निफ्ट), चेन्नै ने अक्टूबर माह भर खादी महोत्सव 2024 का आयोजन किया, जिसका उद्देश्य खादी की विरासत और भारतीय

संस्कृति व सतत फैशन में इसकी भूमिका को सम्मान देना था। यह माह भर चलने वाला उत्सव 2 अक्टूबर से 31 अक्टूबर तक आयोजित किया गया, जिसमें खादी के प्रचार प्रसार, युवा पीढ़ी को इसकी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्ता से परिचित कराने, तथा सतत फैशन विकल्पों को प्रोत्साहित करने हेतु विविध गतिविधियाँ आयोजित की गईं।

खादी महोत्सव 2024 – निफ्ट चेन्नै की प्रमुख झलकियाँ:

▪ खादी और हथकरघा फैशन वॉक :

17 अक्टूबर 2024 को निफ्ट चेन्नै परिसर में छात्रों और कर्मचारियों के लिए खादी महोत्सव के अंतर्गत खादी और हथकरघा परिधानों की एक विशेष फैशन वॉक का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य पारंपरिक वस्त्रों के प्रति जागरूकता बढ़ाना था। फैशन वॉक में खादी और हथकरघा की सुंदरता को प्रदर्शित किया गया, जिससे न केवल टिकाऊ फैशन को बढ़ावा मिला, बल्कि स्थानीय कारीगरों को भी समर्थन मिला । प्रतिभागियों को पर्यावरण के अनुकूल फैशन विकल्प अपनाने के लिए प्रेरित किया गया।

खादी हैंड स्पिनिंग कार्यशाला :

22 अक्टूबर, 2024 को खादी महोत्सव के अंतर्गत निफ्ट चेन्नै में छात्रों के लिए एक हैंड स्पिनिंग कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका संचालन नेशनल यूथ प्रोजेक्ट से जुड़े प्रसिद्ध खादी सूत कातने वाले श्री ए. करुणाकरन ने किया । इस व्यावहारिक कार्यशाला में छात्रों और संकाय सदस्यों को खादी सूत कातने की पारंपरिक कला का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त हुआ ।

प्रतिभागियों को चरखा चलाने का अवसर मिला, जिससे उन्हें खादी निर्माण की जटिलताओं को समझने और इसके प्रति गहरी सराहना विकसित करने में मदद मिली ।

यह कार्यशाला न केवल तकनीकी अनुभव प्रदान करती थी, बल्कि ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी समृद्ध थी — यह बताया गया कि किस प्रकार महात्मा गांधी के नेतृत्व में खादी कताई भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में आत्मनिर्भरता का प्रतीक बनी।

गांधी और खादी पर डॉक्यूमेंट्री की स्क्रीनिंग :

खादी महोत्सव 2024 के अंतर्गत 22 अक्टूबर 2024 को छात्रों के लिए महात्मा गांधी और खादी के प्रचार में उनके योगदान पर आधारित एक डॉक्यूमेंट्री का प्रदर्शन किया गया। इस फिल्म में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारत की आत्मनिर्भरता और आर्थिक स्वतंत्रता की दिशा में गांधीजी के प्रयासों को रेखांकित किया गया।

स्क्रीनिंग के माध्यम से छात्रों को गांधीजी के अहिंसा, आत्मनिर्भरता और देशभक्ति की भावना पर आधारित विचारों की गहरी समझ प्राप्त हुई। इस डॉक्यूमेंट्री ने छात्रों को यह दिखाया कि खादी केवल एक वस्त्र नहीं, बल्कि स्वतंत्रता आंदोलन का एक सशक्त प्रतीक भी रहा है।

"खादी आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान का प्रतीक है। खादी पहनना मात्र कपड़ा पहनना नहीं, बल्कि यह देशसेवा का मंत्र है।"

खादी स्टॉल एवं प्रदर्शनी :

खादी महोत्सव 2024 के अंतर्गत 22 अक्टूबर 2024 को निफ्ट चेन्नई ने खादी ग्रामोद्योग भवन के सहयोग से "प्रदर्शनी सह बिक्री" (Exhibition cum Sale) का आयोजन किया। इस पहल का उद्देश्य खादी को प्रोत्साहित करना था, साथ ही सतत और नैतिक फैशन की ओर बढ़ते रुझान के साथ जुड़ना भी था।

वस्त्रों में रचा बसा भारत

दिव्या एन
सहायक प्रोफेसर, फैशन संचार विभाग
राजभाषा अनुभाग प्रभारी

जैसे विभिन्न धागे बुनते हैं एक अनुपम वस्त्र,
वैसे ही विविध क्षेत्रों के लोग जुड़कर बनते हैं भारत|

जैसे माहेश्वरी की गरिमामयी दमक,
ज़रदोज़ी की राजसी चमक,
चंदेरी की कोमल पारदर्शिता,
ईकत की रहस्यमयी बुनावट,
और बंधनी की रंग-बिरंगी चपलता
हम अपनी संस्कृति की भव्यता में अभिभूत होते हैं।

जैसे कशिदा में बेल-बूटे महकते हैं,
जैसे पैठानी की किनारी में मोर मचलते हैं,
जैसे पाटोला में हाथी चलते हैं,
और मिज़ो पूअन में बाघ टहलते हैं
हम आज़ादी के अनुभूति पर मनन करते हैं।

हम उस धरोहर को संजोते हैं
जो हमें कहानियों के रूप में विरासत में मिली है
बलुचरी की चित्रमय साड़ियों में,
कांथा के दुपट्टों में,
पिचवाई की भक्तिमय कलाकृतियों में,
और कलमकारी की पट्टियों में।

जैसे धागे मिलकर गूंथते हैं
कांची के कोरवै में,
पट्टेडांचू की चेक्स में,
केरल के शुभ्र कसावु में
वैसे ही हम भारतवासी
दृढ़ संकल्प करते हैं, कि हम मिलकर
अपने भारत को संजोएंगे, संवर्धित करेंगे,
और हर रंग, हर रेशे में उसकी एकता को सजीव रखेंगे।

“धागों में बसी विरासत” – मदुरै क्लस्टर भ्रमण की एक झलक

प्रस्तुतकर्ता : एफ एम एस (24-26)

परिचय

मदुरै, तमिलनाडु का एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक नगर, न केवल अपने प्रसिद्ध मंदिरों के लिए जाना जाता है, बल्कि अपनी पारंपरिक हस्तकला और कारीगर समुदायों के लिए भी प्रसिद्ध है। फैशन प्रबंधन विभाग (एफ एम एस), निफ्ट चेन्नै के छात्रों के लिए यह स्थान एक शैक्षणिक प्रयोगशाला की तरह था, जहाँ हमने न केवल शिल्प का अध्ययन किया, बल्कि संस्कृति और समुदाय को भी महसूस किया हमारा भ्रमण विशेष रूप से कोडंबाक्कम साड़ियों की पारंपरिक बुनाई और उससे जुड़े सामाजिक व आर्थिक पहलुओं को समझने के लिए आयोजित किया गया था। यह साड़ियाँ पारंपरिक डिजाइन, स्थानीय तकनीक, और सामाजिक विरासत का प्रतीक हैं। इस अनुभव ने हमें सिखाया कि फैशन केवल ग्लैमर नहीं है, बल्कि इसके पीछे मेहनत, इतिहास और पहचान भी होती है।

शिल्प, संस्कृति और समुदाय से साक्षात्कार

मदुरै को तमिलनाडु की सांस्कृतिक राजधानी यूँ ही नहीं कहा जाता। यहाँ के मंदिर, मेलों, और बाज़ारों में आज भी परंपराएँ जीवित हैं। वंदीयर क्षेत्र में स्थित बुनकर समुदायों से मिलने और उनके कार्य को देखने का अवसर हमारे लिए विशेष रहा। कोडंबाक्कम साड़ी का निर्माण एक बहु-चरणीय प्रक्रिया है, जिसमें पारंपरिक करघों पर महीन धागों से कला रची जाती है।

हमने देखा कि कैसे धागों की रंगाई, सुखाई, स्टार्चिंग, वॉर्पिंग और फिर करघे पर बुनाई होती है। हर चरण में तकनीकी जानकारी के साथ-साथ धैर्य और समर्पण भी ज़रूरी है। बुनाई में प्रयोग होने वाले जैक्वार्ड कार्ड्स के ज़रिए पारंपरिक मोटिफ्स को आकार दिया

जाता है, जो इस शिल्प की सुंदरता को और भी बढ़ाता है।हमारी टीम ने कई अनुभवी कारीगरों से बातचीत की—जैसे श्री देवदास जी, श्री जयप्रकाश जी और लक्ष्मी अम्मा। उन्होंने बताया कि यह शिल्प पीढ़ियों से उनके परिवार में चला आ रहा है, लेकिन आज यह संकट में है। युवा पीढ़ी इस क्षेत्र में करियर नहीं बनाना चाहती, और बहुत से कारीगर अब इस पेशे को छोड़ने पर विवश हैं। फिर भी उनमें से कई लोग पूरी निष्ठा से इसे जीवित रखने में लगे हुए हैं।

बाजार, चुनौतियाँ और संभावनाएँ

कोडंबाक्कम साड़ियाँ अधिकतर को-ऑप्टेक्स जैसी सहकारी संस्थाओं के माध्यम से बिकती हैं। कुछ राज्य स्तरीय प्रदर्शनियों और दुकानों में इनका प्रदर्शन होता है, लेकिन बड़े पैमाने पर इनकी मार्केटिंग नहीं हो पाती। हमने खुद देखा कि कारीगरों के पास अपनी साड़ी की कीमत तय करने का कोई नियंत्रण नहीं होता। इससे उनकी मेहनत का मूल्य अक्सर कम हो जाता है।

डिज़ाइन हस्तक्षेप, सोशल मीडिया पर उपस्थिति, और नए ग्राहक समूहों के साथ जुड़ाव इस शिल्प को पुनर्जीवित कर सकते हैं। आज के उपभोक्ता "स्थानीय और टिकाऊ" उत्पादों में रुचि दिखा रहे हैं, और ऐसे में कोडंबाक्कम साड़ी को एक नया बाज़ार मिल सकता है। एक दिलचस्प प्रयास हमने "LoomWorld" यूट्यूब चैनल के ज़रिए देखा, जो इन कारीगरों की कहानी को डिजिटल रूप से साझा कर रहा है।

हालाँकि, समस्याएँ कम नहीं हैं – कम आय, स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ, डिज़ाइन में बदलाव की कमी, और डिजिटल साक्षरता की न्यूनता। फिर भी, इन शिल्पों में गहराई और जीवन है, जिन्हें सही मार्गदर्शन और सहयोग से एक बार फिर सशक्त किया जा सकता है।

अनुभव और निष्कर्ष

हमारे विभाग के लिए यह भ्रमण केवल एक शैक्षणिक परियोजना नहीं था, बल्कि यह एक संवेदनात्मक और सांस्कृतिक जुड़ाव का अनुभव था। हमने देखा कि एक साड़ी के पीछे केवल रंग और धागा नहीं, बल्कि परंपरा, पहचान, और श्रम की लंबी प्रक्रिया छिपी होती है।

एक फैशन प्रबंधन के छात्र के रूप में, यह अनुभव हमें यह सोचने पर विवश करता है कि कैसे हम इन पारंपरिक शिल्पों को आधुनिक बाज़ार से जोड़ सकते हैं—बिना उनकी आत्मा खोए। हम अब इन शिल्पों के लिए डिज़ाइन, ब्रांडिंग और मार्केटिंग के ज़रिए नया जीवन देने के लिए अधिक प्रेरित हैं।
अंततः, कोडंबाक्कम साड़ी की कहानी हमें यही सिखाती है कि जब तक हम अपनी जड़ों से जुड़े हैं, तब तक हम सच्चे अर्थों में आगे बढ़ सकते हैं।

ईश्वरीय नृत्य
ब्रह्मांडीय ऊर्जा की लयात्मक अभिव्यक्ति

छात्रा : रश्मि कुमारी
सत्र : पाँचवाँ , निटवेर डिज़ाइन विभाग
संकाय मार्गदर्शक : श्री श्रीधर आमंची
एसोसिएट प्रोफेसर -निटवेर डिज़ाइन विभाग

परिचय

यह परियोजना "बुनाई वस्त्रों पर सतही रूपांकन" विषय के अंतर्गत प्रस्तुत की गई है, जिसमें छात्रों को हस्त कढ़ाई के विभिन्न प्रकारों का अभ्यास करना था, किंतु पारंपरिक बुने हुए वस्त्रों के स्थान पर खिंचाव युक्त बुनाई वाले वस्त्रों पर। आमतौर पर, कढ़ाई एक स्थिर सतह पर की जाती है — जैसे कि सूती, रेशमी, खादी या अन्य बुने हुए कपड़े — क्योंकि वे अधिक टिकाऊ होते हैं और सिलाई के लिए उपयुक्त सतह प्रदान करते हैं। परन्तु, बुनाई के वस्त्र लचीले होते हैं, वे खिंचते हैं, सिकोड़ते हैं और आकार में परिवर्तन कर सकते हैं। ऐसी सतह पर कढ़ाई करना तकनीकी दृष्टि से चुनौतीपूर्ण होता है। बुनाई परिधान विभाग के छात्र होने के नाते, इस विषय का मुख्य उद्देश्य हमें यह सिखाना था कि इन लचीले कपड़ों पर किस प्रकार उचित सामग्रियों, टाँकों (stitches), रंगों और शिल्प तकनीकों का प्रयोग करके संतुलित और सौंदर्यपूर्ण कढ़ाई की जा सकती है।

इस प्रक्रिया में हमने सीखा:

- बुनाई वाले वस्त्रों की संरचना को समझना (जैसे कि सिंगल जर्सी, इंटरलॉक, रिब आदि) ।
- कपड़े की खिंचाव क्षमता को ध्यान में रखते हुए टाँकों का चयन करना ।
- सामग्री का प्रयोग करते हुए सतह पर गहराई, गति और स्पर्शीय विविधता पैदा करना ।
- और सबसे महत्वपूर्ण, पारंपरिक कढ़ाई को आधुनिक अमूर्त (abstract) रूप में प्रस्तुत करना

परियोजना का संक्षिप्त विवरण

प्रत्येक छात्र को चार कढ़ाई नमूने बनाने थे:
- आकार: 10 इंच × 10 इंच
- क्षेत्र कवरेज: न्यूनतम 80% कवर होना अनिवार्य
- तकनीक: सीखी गई हस्त कढ़ाई विधियाँ (जैसे चेन टाँक, सताँ टाँक, फ्रेंच गाँठ, बीड वर्क, ज़री कार्य आदि)
- शर्त: कोई भी पूर्वनिर्धारित आकृति, मोटिफ या वस्तु का प्रयोग नहीं किया जा सकता था
- उद्देश्य: चयनित विषय की अमूर्त कल्पना के माध्यम से प्रस्तुति

प्रेरणा और विचार की व्याख्या

मेरे द्वारा चुनी गई प्रेरणा है – "ईश्वरीय नृत्य"।
यह केवल शारीरिक गति नहीं, बल्कि ब्रह्मांडीय ऊर्जा, चेतना और आध्यात्मिक स्पंदन का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति में शिव का तांडव, अप्सरा उर्वशी का सौंदर्यनृत्य शक्ति का लयात्मक प्रवाह इस दिव्य नृत्य के विभिन्न रूप हैं।इन विचारों को किसी मूर्त आकृति में नहीं दर्शाया गया, बल्कि अमूर्त रेखाओं, गति की दिशा, रंगों के प्रवाह और सामग्री के प्रयोग से इन भावनाओं को चित्रित किया गया है।

हर नमूना एक विशेष ऊर्जा को प्रकट करता है – जैसे:
- ब्रह्मांड का लयात्मक
- विस्तार,ध्यान व जागरण की आंतरिक चेतना,
- गति और संतुलन की सजीव अनुभूति,
- और शक्ति का तेजस्वी विस्फोट।

सभी नमूने कल्पनात्मक हैं, जिनमें कोई पारंपरिक आकृति नहीं है – केवल विचारों और भावनाओं की अमूर्त अभिव्यक्ति है। मेरे लिए "ईश्वरीय नृत्य" की अवधारणा को समझने और उसे अपने डिज़ाइन में उतारने के लिए, मैंने अपने बचपन के अनुभवों और हिंदू संस्कृति के प्रति अपनी रुचि को ध्यान में रखा। बचपन से ही, मैं हिंदू पौराणिक कथाओं और ग्रंथों जैसे कि रामायण, महाभारत, और गीता से घिरी हुई थी।

इन ग्रंथों में वर्णित ईश्वरीय कथाएं और पात्र मेरे लिए हमेशा से ही आकर्षक रहे हैं। जैसे-जैसे मैं बड़ी हुई, मेरी रुचि हिंदू संस्कृति और उसके विभिन्न पहलुओं में और भी गहरी होती गई।

जब मुझे इस अवधारणा को अपने डिज़ाइन में उतारने का अवसर मिला, तो मैंने "ईश्वरीय नृत्य" को चुना, क्योंकि यह एक ऐसा विषय है जो मुझे लगता है कि पहले से ही किसी एक रूप में मौजूद नहीं है। संकाय मार्गदर्शक के निर्देशन अनुसरण करते हुए, मैंने इन पौराणिक कथाओं और ग्रंथों से प्रेरणा लेकर, उनमें वर्णित चरित्रों और कथाओं को एक नए और अनोखे तरीके से प्रस्तुत करने का प्रयास किया।

इस प्रयास के माध्यम से, मैंने अपने डिज़ाइन में इन कथाओं और चरित्रों को शामिल करने का प्रयास किया, जिससे लोगों को हिंदू संस्कृति और उसके विभिन्न पहलुओं के बारे में जानने का अवसर मिले। मुझे लगता है कि मेरी संस्कृति को नए जमाने में बिना उसमें कोई हस्तक्षेप करते हुए प्रस्तुत करने का यह मुझे एक अवसर मिला है, और मैं इसे सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए प्रयासरत हूँ। इस प्रकार, "ईश्वरीय नृत्य" की अवधारणा मेरे लिए न केवल एक डिज़ाइन प्रोजेक्ट है, बल्कि यह मेरे लिए अपनी संस्कृति और विरासत को समझने और उसे नए तरीके से प्रस्तुत करने का एक अवसर भी है।

परियोजना विवरण

संकल्पना : ईश्वरीय नृत्य

प्रस्तावना : "ईश्वरीय नृत्य" एक आध्यात्मिक और भावनात्मक विषय है, जो सृजन, विनाश, स्त्रीत्व और समय की चक्रबद्ध ऊर्जा को अमूर्त रूप में प्रकट करता है। यह नृत्य केवल शारीरिक गति नहीं, बल्कि एक गहन अनुभव है — जहां रूप, रंग, गति और ऊर्जा मिलकर एक दिव्य संवाद रचते हैं।इस प्रोजेक्ट के माध्यम से निम्नलिखित चार अवस्थाओं को कलात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है:

डिज़ाइन प्रक्रिया

1.विषय चयन: चारों भावनात्मक अवस्थाओं पर आधारित अमूर्त रेखांकन बनाए गए, जिनमें शरीर नहीं बल्कि ऊर्जा की दिशा और कंपन को दर्शाया गया।

1. **सृष्टि** – जीवन की उत्पत्ति, जल और ऊर्जा का प्रवाह
2. **कालरात्रि** – समय का भयंकर स्वरूप, तांडवमय शक्ति

3. **विनाश** – अग्नि और विस्फोट, अंत और रूपांतरण
4. **उर्वशी** – स्त्रीत्व की कोमल, सुंदर और शक्तिशाली ऊर्जा

2. डिज़ाइन तत्त्व :

- **रेखाएं** : लहरदार, सर्पाकार और चक्राकार रेखाएं — जो ऊर्जा की दिशा दर्शाती हैं।

- **आकार** : जैविक और वृत्तीय आकृतियां, जो चक्र और ऊर्जा प्रवाह का प्रतीक हैं।

- **बिंदु :** माइक्रो व मैक्रो बिंदुओं का प्रयोग (विशेष रूप से सृष्टि में) कंपन और ऊर्जा केंद्र दर्शाने हेतु।

- **स्थान :** सभी स्केचों में मुख्य आकृति को केंद्र में रखकर नकारात्मक स्थान का संतुलित उपयोग।

3. डिज़ाइन सिद्धांत :

- **संतुलन :** कालरात्रि और उर्वशी में स्पष्ट सममितीय और रैडियल संतुलन।
- **गति :** सृष्टि व विनाश में रेखाओं द्वारा ऊपर की ओर ऊर्जा की दिशा दिखती है।
- **बल :** प्रत्येक रचना का केंद्र बिंदु स्पष्ट रूप से उभारा गया है (जैसे चक्र, अग्नि, नेत्र)।
- **लय :** वृत्तों और रेखाओं की पुनरावृत्ति से गति और स्पंदन का आभास।
- **एकता :** सभी रचनाएं रंग योजना, रूप और थीम में एकरूप हैं।

4. रंग योजना :

- **लाल:** शक्ति, साहस, विनाश
- **नीला:** शांति, जल, ब्रह्मांड
- **काला:** रहस्य, काल, गहराई
- **नारंगी:** अग्नि, ऊर्जा, प्रकाश
- **गुलाबी:** स्त्रीत्व, आध्यात्मिक ऊर्जा
- **सफेद:** शुद्धता, संतुलन
- **हरा:** जीवन, पुनर्जन्म, संवेदना

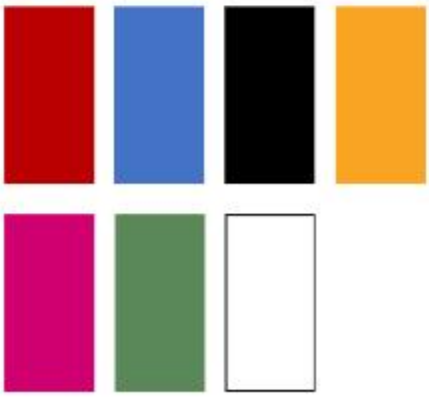

5. संकाय मार्गदर्शक निर्देशन और सुधार:

कालरात्रि: आकृति को स्पष्ट, केंद्र को अधिक उभारने का सुझाव।

विनाश: रेखाओं की दिशा और गति में स्पष्टता लाने की सलाह।

सृष्टि: तरंगों और बिंदुओं की पुनरावृत्ति बढ़ाने का सुझाव।

उर्वशी: रंग संयोजन में बदलाव — शीर्ष चक्र में बैंगनी, हृदय क्षेत्र में गुलाबी और मूलाधार में गहरे रंग। साथ ही, अधिक ऊर्जा दर्शाने के लिए रंगों में कंट्रास्ट जोड़ा गया।

6. कढ़ाई तकनीक और टांकों का विवरण :

- **एप्लीक कार्य :** आधार पर आकृति जोड़ने की सजावटी कढ़ाई।

- **द्वि-स्तरीय एप्लीक :** दो परतों से गहराई का निर्माण।

- **त्रि-स्तरीय एप्लीक :** तीन परतों से बहुस्तरीय प्रभाव और शक्तिशाली प्रस्तुति।

- **धागा कार्य :** विभिन्न टांकों से आकृतियों को भरना और सजाना।

- **मनका सजावट :** बीड्स व सिक्विन्स से झिलमिलाहट और ऊर्जा बिंदुओं की अभिव्यक्ति

- **ब्लैंकेट स्टिच :** यह टांका किनारों को उभारने, सीमाओं को सुदृढ़ और सौंदर्यपूर्ण बनाने हेतु प्रयोग किया जाता है।

- **स्टेम स्टिच :** इसका उपयोग वक्र रेखाएं, नाड़ी या प्रवाह को दिखाने के लिए किया जाता है। यह टांका आकृति को लयबद्ध बनाता है।

बीड्स और टांके का कक्षा अभ्यास कार्य

- **सैटिन स्टिच :** इस टांके द्वारा किसी भी आकृति को भरने में सहायता मिलती है। इसका उपयोग चक्र, केंद्र बिंदु और प्रमुख आकृतियों को गहरा करने में होता

- **काउचिंग स्टिच :** यह टांका मोटे धागों को सतह पर रखने के लिए किया जाता है। इससे दिशा और प्रवाह का स्पष्ट संप्रेषण होता है।

- **शुगर बीड्स :** यह छोटे चमकदार मनके चक्र और ऊर्जा केंद्रों को सजाने हेतु प्रयुक्त हुए हैं।

- **पाइप बीड्स :** लंबे मनके ऊर्जा प्रवाह या दिशाओं को दिखाने में सहायक हैं।

- **फ्लैट सिक्विन्स :** यह सतह पर प्रकाश की झिलमिलाहट दर्शाने के लिए उपयोग में लाए गए हैं, विशेषकर स्त्रीत्व और आध्यात्मिक ऊर्जा के भाव में।

7. सामग्री अन्वेषण :

- **कॉटन यार्न :** प्राकृतिक रेशा, कोमलता और पारंपरिकता को दर्शाता है। यह आधार भरने और लहरों के निर्माण हेतु उपयुक्त है।

- **ऐक्रेलिक यार्न :** यह कृत्रिम यार्न रंगों को जीवंत रूप में प्रदर्शित करता है और अधिक बनावट देता है।

अंतिम निष्कर्ष :

- कुल विकसित नमूनों की संख्या : 4

- **मुख्य विषय** : ईश्वरीय नृत्य — एक ऐसा चक्र जिसमें सृष्टि, विनाश, स्त्रीत्व और तांडव एक साथ नृत्य करते हैं।

1. संहार

विवरण: यह नमूना अग्नि और ऊर्जा के विस्फोट को दर्शाता है — जहाँ सृजन का अंत एक नवीन आरंभ का द्वार खोलता है।

रंगों का प्रतीकात्मक अर्थ: लाल, नारंगी एवं पीला — ये अग्नि, क्रोध, ऊर्जा तथा रूपांतरण का संकेत करते हैं।

आकृतियाँ: ऊपर की ओर उठती लहरें, विस्फोट जैसी संरचना और केन्द्र से बाहर की ओर फैलती हुई ऊर्जा।

सौंदर्य पक्ष: विविध बनावट, जीवंत अग्निशिखा की छवि, जो विनाश की तीव्र गति और स्वरूप को सजीव रूप में प्रस्तुत करती है।

संहार

2. सृजन

विवरण: यह रचना जीवन की उत्पत्ति, जल तत्त्व तथा ऊर्जा के सामंजस्य को प्रदर्शित करती है — एक दिव्य प्राकट्य।

रंगों का प्रतीकात्मक अर्थ: नीला एवं हरा — ये शांति, जीवन प्रवाह, जल तत्त्व तथा पुनर्जन्म का द्योतक हैं।

आकृतियाँ: वृत्ताकार केन्द्र, लहरदार पत्तियाँ एवं सूक्ष्म बिंदुओं की पुनरावृत्ति — जैविक ऊर्जा का स्वरूप।

सौंदर्य पक्ष: चमकते कांच मनके एवं कलात्मक सजावट, जो सृष्टि की दिव्यता और ब्रह्मांडीय विस्तार को प्रकट करते हैं।

सृजन

3. कालरात्रि

विवरण: यह देवी का रौद्र, तांडवमय स्वरूप है — जो अंधकार और काल को अपने अधीन कर ब्रह्मांड की ऊर्जा को संचालित करती है।

रंगों का प्रतीकात्मक अर्थ: श्याम, लाल एवं श्वेत — ये भय, शक्ति, शुद्ध चेतना तथा संतुलन के प्रतीक हैं।

आकृतियाँ: आठ भुजाओं वाली देवी आकृति, मध्य में ऊर्जा केन्द्र एवं उसके चारों ओर वृत्ताकार संरचनाएँ।

सौंदर्य पक्ष: तीव्र रंग विरोधाभास (कॉन्ट्रास्ट), सघन बनावट एवं बारीक मनका कार्य — जो तांडव, भय एवं दैवी शक्ति के तेज को उभारते हैं।

कालरात्रि

4. उर्वशी स्त्रीत्व

विवरण: यह नमूना नारी ऊर्जा, सौंदर्य, पोषण शक्ति तथा आध्यात्मिक चक्रों को मूर्त रूप देता है।

रंगों का प्रतीकात्मक अर्थ: गुलाबी, बैंगनी, लाल एवं श्वेत — ये करुणा, प्रेम, शक्ति तथा शुद्धता के प्रतीक हैं।

आकृतियाँ: केन्द्रित स्त्री रूप, उसके चारों ओर चक्रवात की भांति लहराती आकृतियाँ — जो स्त्रीत्व और योगिक चेतना का आभास कराती हैं।

सौंदर्य पक्ष: संतुलित संरचना, कोमल सतह और उभरे हुए चक्र — जो नारीत्व की संतुलित एवं सशक्त उपस्थिति को दर्शाते हैं।

उर्वशी स्त्रीत्व

निष्कर्ष

आधुनिक परिधान शिल्प में भारतीय संस्कृति की प्रासंगिकता

भारतीय संस्कृति की जड़ें अत्यंत गहरी और विस्तृत हैं — विशेष रूप से नृत्य, संगीत, ध्यान, योग, शिल्पकला और आध्यात्मिक अनुभूति जैसी विधाओं में। ईश्वरीय नृत्य केवल पौराणिक कथाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत चेतना है, एक गति है, एक भाव है, जो आज की युवा पीढ़ी के भीतर भी जागृत हो सकता है। यह नृत्य शरीर की लय नहीं, बल्कि आत्मा की तरंग है, जो कालातीत है। इस शिल्प-परियोजना के माध्यम से मैंने यह प्रयास किया है कि बिना किसी पारंपरिक प्रतीक को विकृत किए, और बिना सांस्कृतिक भावनाओं या मूल्यों में किसी प्रकार की बाधा पहुँचाए, उस दिव्य भावना को वर्तमान युग की कल्पना में स्थान दिया जाए।यह रूपांतरण न तो परंपरा को तोड़ता है, और न ही उसे सीमित करता है, बल्कि उस भावना को नवीन दृष्टिकोण से देखने का अवसर देता है — जहाँ विचार, गति और चेतना को सूक्ष्मता से रूप, रंग और बुनावट के माध्यम से महसूस किया जा सकता है। इस प्रकार, ईश्वरीय नृत्य की परंपरागत अवधारणा, आधुनिक सृजनशीलता के माध्यम से, आज के सामाजिक, सांस्कृतिक और सौंदर्यबोध से जुड़ती है — बिना किसी टकराव या हस्तक्षेप के।

यह परियोजना केवल एक डिज़ाइन अभ्यास नहीं, बल्कि मेरी अनुभूतियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति रही है — जहाँ प्रत्येक टांका और रंग एक भावना का वाहक है। मैं अपने संकाय मार्गदर्शक के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके मार्गदर्शन और सुझावों से यह कार्य एक स्पष्ट दिशा और सौंदर्य प्राप्त कर सका।

फैशन के क्षेत्र में भारतीय शिल्पकारों का महत्व

सरद्धाति दत्ता
सहायक प्रोफेसर
वस्त्र डिज़ाइन विभाग

भारतीय फ़ैशन उद्योग का बाज़ार मूल्य 15.1 करोड़ है और 2024 – 2025 तक लगभग 45 करोड़ तक पहूंचने की उम्मीद है । यदि हम समयरेखा को देखें :
मौर्य साम्राज्य में साड़ी पहनने की शुरुआत की गयी थी । एक पेड़ के जड़ से एक प्रकार के धागे को निकालना तथा रेशम और सूती कपड़े को बनाना व उससे पहनावा बनाना – यह पद्धति अपने आप में एक काला है ।
1950 से लेकर आज तक बॉलीवुड ने पहनावे के विभिन्न प्रकार को बखूबी दर्शाया है और लोकप्रिय बनाया है ।
स्वतन्त्रता सग्राम के समय भी महात्मा गांधी ने खादी का उपयोग करने की मांग की और हमारे भारतीय बुनकरों के हाथ से बनाए हुए कपड़े के महत्व पर ज़ोर दिया ।

उपर्युक्त सारी समयरेखा यह देखा गया कि हर काल में, स्थिति में हमारे भारतीय शिल्पकारों का क्या अनूठा योगदान रहा है भारत के फ़ैशन को मजबूत बनाने में यह समुदाय ही असली खजाना है । इनके हाथों से हर एक पदार्थ के पीछे वर्षों कि कड़ी मेहनत और श्रम है । यह समुदाय किसी भी तरह का हाथ का काम करने में सक्षम है – प्राचीन काल से अब तक भारत की गरिमा, सौन्दर्य और मर्यादा को बांधे हुए हैं भारतीय शिल्पकार ।

हमारे पर्यावरण में जितने भी संसाधन उपलब्ध हैं – प्रकृतिक रूप से –उन सबका उपयोग किया जाता है हमारे भारतीय शिल्पकारों द्वारा । किसी भी तरह का मशीन कार्य - वह कम से कम प्रयोग करते हैं और हमारी संस्कृति और काला का एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करते हैं । यह समुदाय धीमे फ़ैशन को प्रोत्साहन देती है ।

भारतीय शिल्पकारों का फ़ैशन जगत में महत्व :

- गुणवत्ता और शिल्प कौशल
- पर्यावरण स्थिरता
- विरासत का सास्कृतिक संरक्षण
- नैतिक उत्पादन
- कहानी की वर्णना – हर एक कपड़ा / वस्त्र के पीछे एक रोमांचक कहानी बुनी होती है । इस कहानी के माध्यम से इस राष्ट्र में आदि काल में क्या राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था रही होगी, उसके लोग, पहनावा, चिंताधारा आदि का सारा / पूर्ण इतिहास मिलता है ।
- वैश्विक पहनावा : भारत के शिल्पकारों की वजह से पूरे विश्व में भारतीय फ़ैशन का बोलबाला है – इससे वस्त्र आयात – निर्यात उद्योग जगत में बहुत धनराशी का आगमन हुआ है और विदेशी मुद्रा का बढ़ावा हुआ है ।
- इस कला का उपयोग करने के कारण हेतु महिलाओं को ज्यादत्तर आमदनी का रास्ता मिला है और वह वित्तीय स्वतन्त्रता से आगे बढ़ रही है (आर्थिक सशक्तीकरण) ।

"भारतीय कारीगर और शिल्पकार भारतीय फैशन की दुनिया को आकार देते हैं , अद्वितीय, टिकाऊ और नैतिक रूप से निर्मित सामान पेश करने में आवश्यक हैं ।"

- ज्यादत्तर शिपकार गाव और जिलों में ही रोजगार ढूंढ प रहे हैं – इससे उन्हें शहरों में उनको जाने की जरूरत नहीं पड़ रही है । जहां एक तरफ भारतीय शिल्पकारों का बड़ा महत्व है, वहाँ उनको अनेक चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है ।

- बाजार की मांग में उतार – चढ़ाव के कारण आर्थिक संघर्ष करना पड़ता है । यह चलन शिल्पकारों की नई युवापीढ़ी के लिए हतोत्साहित होता जा रहा है और वे इस कला से जुड़ना नहीं चाहते हैं । तेज फ़ैशन एवं मशीन में बने हुए कपड़ों की संख्या और गति इतनी है

- पुराने / वरिष्ठ / गिग्गज शिल्पकारों की संख्या घटती जा रही है । कि आज के दिनों में इंका मुक़ाबला करना कभी कभी असंभव हो जाता है ।

- यह समुदाय दूर दराज के गाव में स्थित होते हैं, जहां बुनियादी ढांचा की कमी और खराब विवरण की रणनीतियाँ होती हैं ।

इससे इस समस्या से बचने के लिए हम जनता उपभोक्ताओं को सजग रखना / करना होगा । अगर हम समझें कि तेज गति से बनी हुई मशीन में बना कपड़ा प्रकृति के लिए कितना हानिकारक है ; यह प्रकृति में कितना लैंडफिल को बढ़ावा दे रहा है ; हमारे जल –वायु को प्रदूषित कर रहा है और हमारे आने वाले दिनों में भारतीय फ़ैशन को विश्वस्तर पर गौरवान्वित करेगा । भारतीय कारीगर और शिल्पकार भारतीय फैशन की दुनिया को आकार देते हैं , अद्वितीय, टिकाऊ और नैतिक रूप से निर्मित सामान पेश करने में आवश्यक हैं । वे बड़े पैमाने पर उत्पादन की दुनिया में खड़े होकर फ़ैशन में गुणवत्ता, परंपरा और कहानी बुनाते हैं ।

आइए , हम सजग होकर इसमें सहयोग दें और भारतीय कारीगरों का समर्थन करें एक उज्ज्वल प्रकृतिक भविष्य के लिए ।

निजता की तलाश

टी. वी. राजेन्द्रन
हिन्दी अनुवादक (एक्सपेर्ट)

आज का ईमानदार व्यक्ति
साधन विहीन, लेकिन प्रबुध
अपनी निजता को बचाता हुआ
और, जोड़ता हुआ अपने को
अपने परिवेश से
पर, निरंतर टूटता हुआ
इस जोड़ने की प्रक्रिया में ।

फिर भी, उसके पास
एक सपना होता है
अपने को सार्थक करने का
और, ईमानदारी को बनाए रखने का ।

लेकिन, आहत होता है पग-पग पर
और, पाता है अपने को
हारा हुआ अपने परिवेश से ।

आखिर समझ पाया कि
यही स्वरूप है अकेलापन का,
यही स्थिति है ईमानदारी की
निजता की तलाश में ।

इमेजिनेरियम: फैशन संचार विभाग द्वारा आयोजित कला प्रदर्शनी

दिव्या एन
सहायक प्रोफेसर, फैशन संचार विभाग
राजभाषा अनुभाग प्रभारी

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (निफ्ट) चेन्नै की 30वीं वर्षगांठ और निफ्ट के 40 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में, फैशन संचार विभाग ने इमेजिनेरियम नामक एक विशेष कला प्रदर्शनी का आयोजन किया, जिसमें 'कृष्णा फॉर टुडे' के संस्थापक श्री केशव वी. की कृतियाँ प्रदर्शित की गईं। यह कार्यक्रम 27 और 28 जनवरी, 2025 को निफ्ट चेन्नई परिसर में आयोजित किया गया।

श्री केशव कला को अपने अस्तित्व के केंद्र में रखते हैं, एक सहज खोज जो उन्होंने लिखना सीखने से भी पहले शुरू कर दी थी। उनके प्रदर्शनों की सूची में तैल चित्र, पोस्टर चित्र, ऐक्रेलिक, पेंसिल, कलम, चारकोल, लकड़ी और डिजिटल माध्यम शामिल हैं। उनके अनुभव में द हिंदू अखबार के लिए एक चित्रकार के रूप में 29 वर्षों की सेवा शामिल है।

कृष्ण फ़ॉर टुडे 'नित्य नूतन' की अवधारणा का मूर्त रूप है, जिसका अर्थ है निरंतर गतिशील और निरंतर विकसित। प्रत्येक कलाकृति कृष्ण के रूप का उपयोग करके सार्वभौमिक सत्य और आख्यानों की पुनर्कल्पना करती है। दृश्य कहानियों से आगे बढ़कर सूक्ष्म दर्शन और अमूर्त विचारों का संचार करते हैं। एक ऑनलाइन आर्ट गैलरी के रूप में, कृष्णा फॉर टुडे, श्री केशव की मूल कलाकृतियों और उनके प्रिंटों का प्रदर्शन और विक्रय करता है।

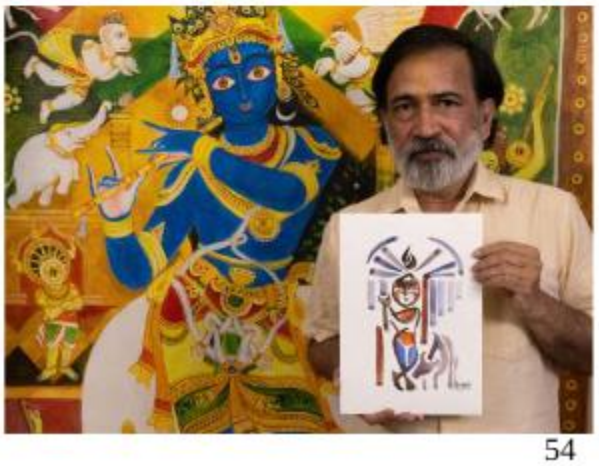

फ़ैशन संचार विभाग की सहायक प्रोफेसर, सुश्री दिव्या एन. द्वारा क्यूरेट किए गए, इमेजिनेरियम में भगवान कृष्ण के विविध रूपों को दर्शाती 42 पेंटिंग, रेखाचित्र और प्रिंट प्रदर्शित किए गए, जिनमें भौतिक कलाकृतियाँ और वीडियो इंस्टॉलेशन दोनों शामिल थे। यह प्रदर्शन कलाकार के डेस्क से प्रेरित था - दैनिक अभ्यास का एक स्थान। यह एक ऐसा स्थान है जहाँ खेल अभ्यास से मिलता है, और कल्पना आकार लेती है।प्रदर्शनी को तीन खंडों में विभाजित किया गया था, जहाँ कलाकृतियों में प्रेम (सार्वभौमिक प्रेम), राग (सृष्टि का माधुर्य) और संवाद (संवाद) की अमूर्त अवधारणाओं को दर्शाया गया था।

इमेजिनेरियम दर्शकों को उन असंख्य तरीकों पर विचार करने के लिए आमंत्रित करता है जिनसे रचनात्मकता और सांस्कृतिक संश्लेषण के माध्यम से एक ही विचार प्रकट हो सकता है।

इस प्रदर्शनी ने न केवल श्री केशव की कलात्मक प्रतिभा का जश्न मनाया, बल्कि कला और डिज़ाइन के माध्यम से सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा देने के लिए निफ्ट चेन्नई के समर्पण की भी पुष्टि की। इमेजिनेरियम ने नवोन्मेषी कलात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से विरासत के संरक्षण की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला।

इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण निफ्ट, चेन्नई के तिरुवल्लुवर ऑडिटोरियम में आयोजित कलाकार वार्ता थी। इस सत्र में श्री केशव ने सुश्री दिव्या एन. के साथ अपनी रचनात्मक प्रक्रिया, अपनी प्रेरणाओं और आधुनिक कला में कहानी कहने के महत्व पर गहन चर्चा की। इस सत्र में कला और कला शिक्षा के क्षेत्र की प्रतिष्ठित हस्तियाँ, जैसे कला शिक्षिका लक्ष्मी कृष्णमूर्ति और प्रसिद्ध कलाकार मनियम सेल्वन, उपस्थित थीं। उनकी उपस्थिति ने चर्चा को समृद्ध बनाया और कलात्मक विरासत और समकालीन व्याख्याओं पर बातचीत को और गहन बनाया।

शहर की धड़कन

योगिता
निटवियर डिज़ाइन , सत्र - 7

शहर की सड़कों पर
हर कदम बेकाबू सा दौड़ता है
हर मोड़ पर
जैसे कोई सपना फिसलता और टूटता है ।
इमारतें ऊंची हैं, मगर
दिल कहीं खो गए ।

वक्त की रफ्तार में रिश्ते भी धुंधले हो गए ।
हर गली, हर चौराहा कुछ कहता है
मगर इस मोड़ में कोई सुनता कहाँ है ?

रातें रोशन हैं , लेकिन
आँखें थकी –थकी सी हैं ,
हर दौड़ती सांस, जैसे
किसी अनजानी मंजिल की सी है ।
चेहरों पर मुस्कान है , मगर
वह भी मजबूरी में ढलती है
रुकने का वक्त है किसके पास,
यहाँ हर दिन एक नई तलाश है ।
कभी –कभी शहर खुद ही थम जाता है
जैसे वो भी अपनी धड़कनों को सुनने लगता है ।
पर, फिर वही तेजी, वही होड़ का शोर
जैसे सब कुछ खोने के डर से भाग रहा हो हर कोई ।
किस दिशा में ये सफर है, किसके लिए ये भाग दौड़
कभी सोच है,
इस भागती दुनिया के पीछे किसका है जोड़ ?

भारतीय संस्कृति में नदी और नारी का महत्व

टी. वी. राजेन्द्रन
हिन्दी अनुवादक (एक्सपेर्ट)

समस्त दुनिया में भारत देश और भारतीय संस्कृति की अपनी अलग विशेषता है । भारत विभिन्न विचारधाराओं और अनुष्ठानों का देश है । पूरे भारत में अनेक जातियाँ और प्रजातियाँ हैं । फिर भी इन सबकी भारतीय होने की एक सामान्य पहचान है । जैसे, गंगा की धारा में अनेक नदियां मिलती हैं तो सभी गंगा हो जाती है । अतः विभिन्न प्रकार की विचारधाराओं और अनुष्ठानों को आत्मसात करने की विशेषता ही भारतीय संस्कृति का मूलाधार है । भारतीय संस्कृति में नदी और नारी का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है । इसलिए भारत के बारे में एक समग्र अवधारणा इन तीनों (नदी, नारी और संस्कृति) के बिना संभव नहीं है ।

जन्म से मृत्यु तक नदियों का हमारे जीवन से गहरा संबंध है। नदियों के बिना हम भारतीय संस्कृति की कल्पना ही नहीं कर सकते। भारत अपनी उत्तर दिशा में हिमवान से तथा बाकी तीनों दिशाओं में समुद्र से सुरक्षित है|

भारत के अन्दर प्रवेश करने से मालूम हो जाएगा कि यह नदियों का देश है और भारतीय संस्कृति नदियों के साथ जुड़ी हुई है । भारत जैसे कृषि प्रधान देश में नदियां जीवन दायिनी हैं । अतः नदियों के बिना भारत वासियों का जीवन अकल्पनीय है । नदी में स्नान करना और नदी की पूजा करना हमारी सांस्कृतिक दिनचर्या का महत्वपूर्ण अंग है ।

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती ।
नर्मदे सिंधु कावेरी जलेस्मिन
सन्निधम करू ॥

अर्थात: हे पवित्र नदियाँ गंगा, यमुना, गोदावरी और सरस्वती, हे पवित्र नदियाँ नर्मदा, सिंधु और कावेरी; कृपया इस जल में उपस्थित रहें और इसे पवित्र बनाएं ।

नदी में स्नान करने से पहले की इस प्रार्थना से नदियों की पवित्रता व्यक्त होती है ।

भारत की सभ्यताओं और संस्कृति का विकास नदियों के किनारे हुआ है। इसलिए नदियों का मानव सभ्यता के विकास में अमिट प्रभाव है । अतः नदियों के बिना सभ्यता और संस्कृति की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। चाहे पुरानी मानव सभ्यताओं की बात करें या नए शहरीकरण की बात करें, नदियों के बिना कुछ भी मुमकिन नहीं है । भारतीय संस्कृति के अनुसार नदी माँ के समान है, मां के समान सम्मानित है ।

नदी गंगा सिर्फ गंगा नहीं, गंगा माता है । भारत में हिन्दू धर्म के सबसे बड़े ग्रंथ महाभारत का आधार ही गंगा है। देवव्रत यानी भीष्म पितामाह की मां गंगा है । महाभारत की कथा के मूल में गंगा-माता के चरित्र का विधान है । भारत के चार राज्यों - उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार और बंगाल से गुजरने वाली गंगा भारतीय संस्कृति की अमरकथा है । यह भी माना जाता है कि नदियों में देवी- देवताओं वास करते है ।

एक विहंगम दृष्टि से देखने पर उत्तर भारत की प्रमुख नदियां हैं गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र तथा दक्षिण भारत की पंपा, पेरियार, कावेरी और गोदावरी । यह भी कहने में कोई अत्युक्ति नहीं होगी कि भारतीय संस्कृति का मूलाधार "अद्वैत मंत्रम" इन नदियों के अधरों में खिला हुआ है और इन नदियों की तरल पानी के साथ भारत के कोने–कोने तक पहुंचता है । यह भी उल्लेखनीय है कि भारत के सभी प्रमुख तीर्थस्थान नदियों के किनारे स्थापित हुए हैं । इसलिए भारतीय सभ्यता और संस्कृति में नदी पवित्रता की प्रतीक है । भारत की सबसे पुरानी और सबसे प्रमुख सभ्यता - "सिंधु-खाटी सभ्यता" - का विकास नदी के किनारे हुआ है । इसलिए भारतीय संस्कृति में नदी पवित्रता की प्रतीक है

"नारी ही मां है और नारी ही सृष्टि है सृष्टि की कल्पना बगैर मां के नहीं की जा सकती है।"

भारतीय संस्कृति में नदी और नारी का गहरा सम्बन्ध और सम्मान है । इसलिए नदी और नारी को माँ का दर्जा दिया गया है । पुराणों के अवलोकन से यह मालूम होता है कि कोई भी पूजा या यज्ञ का अनुष्ठान तब तक पूरा नहीं होता जब तक पुरुष के साथ उसकी पत्नी न हो । ऐसा माना जाता है कि किसी भी पूजा करें, स्त्री शक्ति के स्मरण के बिना वह आराधना अधूरी रह जाती है ।
अथर्ववेद का एक श्लोक है-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया:।।

अर्थ : जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है, वहाँ देवता उनका आनंद लेते हैं।
किन्तु जहाँ उनकी पूजा नहीं होती, वहाँ वे सभी कर्म निष्फल होते हैं।

अर्थात जिस कुल में नारियों की पूजा होती है, उस कुल में दिव्यगुण और उत्तम संतान होते हैं और जिस कुल में स्त्रियों की पूजा नहीं होती, वहां उनकी सब क्रिया निष्फल होती हैं । नारी ही मां है और नारी ही सृष्टि है । सृष्टि की कल्पना बगैर मां के नहीं की जा सकती है। अतः धरती पर नारी का सबसे पवित्रतम रूप है माता यानी जननी । मां को ईश्वर से भी बढ़कर माना जाता है, क्योंकि ईश्वर की जन्मदात्री भी नारी ही रही है।

भारतीय संस्कृति में नारी को विभिन्न रूपों में में इस तरह चित्रित किया गया है कि वह बेटी होती है, बहिन होती है, बहू होती है, बाभी होती है, जेठानी होती है , देवरानी होती है, पत्नी होती है और इन सबसे बढ़कर वह माँ भी होती है । वेदों में माँ को अंबा, अम्बिका, दुर्गा, देवी, सरस्वती, शक्ति, ज्योति, पृथ्वी आदि नामों से संबोधित किया गया है। इसके अलावा माँ को माता, मात, मातृ, अम्मा, अम्मी, जननी, जन्मदात्री, जीवनदायिनी, जनयत्री, धात्री, प्रसू आदि अनेक नामों से पुकारा जाता है। इस प्रकार भारत के सभी परिवारों के ताने बाने में नारी के इनमें से किसी एक या अनेक रूप जुड़ा है ।

विभिन्न युगों के साहित्यकारों ने नारी को विभिन्न रूपों में चित्रित किया है । पौराणिक युग के साहित्य में नारी को जो आदर मिलता था वह मध्यकाल में आकर कम हो गया । मध्यकाल के साहित्य में नारी चरित्र के तरल पक्षों को ही अधिकतर रूप में चित्रित किया गया है । लेकिन आधुनिक युग में आकार यह स्थिति बादल गयी है । आधुनिक युग में नारी का व्यक्तित्व घर की चारदीवारी में सीमित न होकर समाज के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष के साथ उसकी साथी और सहयात्री के रूप में है । कवि जयशंकर प्रसाद के महाकाव्य “कामायनी” में भारतीय नारी के पत्नी स्वरूप को ‘श्रद्धा’ के रूप में चित्रित किया है जो कि पुरुष की अर्धांगिनी और जीवन-साथी है । वास्तव में भारतीय नारी का यही सही स्वरूप है ।

ख्वाहिश

रश्मि कुमारी
निटवेअर डिजाईन
सत्र - 3

ख्वाहिश है
कि मैं सुबह की ओस बन जाऊँ,
हर पत्ती के माथे पर
एक ठंडी दुआ छोड़ आऊँ।

ख्वाहिश है
कि मैं हवा का झोंका बनूँ,
सूखी डालों के बीच से गुजरते हुए
रूह को राहत दूँ।

ख्वाहिश है
कि मैं बादल की छाँव बनूँ,
थकी ज़मीन के दिल पर
बरस कर मुस्कान लिख दूँ।

ख्वाहिश है
कि मैं परिंदों की उड़ान में खो जाऊँ,
क्षितिज की रेखा पर
आज़ादी का रंग भर आऊँ।

ख्वाहिश है
कि मैं नदी की तरह बह जाऊँ,
हर मोड़ पर
नई कहानियाँ गुनगुनाऊँ।

और ख्वाहिश ये है कि हर रंग में खिल जाऊँ,
धरती के दिल से आसमान तक मिल जाऊँ।
लम्हों की परछाई में रोशनी बन जाऊँ,
प्रकृति की धड़कन के साथ सदा गुनगुनाऊँ।

डिज़ाइन कैंप – ग्रीष्मकालीन कार्यक्रम 2025

मई 2025 में, राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (निफ्ट), चेन्नई ने स्कूली बच्चों के लिए तीन दिवसीय ग्रीष्मकालीन कार्यक्रम - डिज़ाइन कैंप का आयोजन किया। युवा मन की कल्पनाशीलता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इस पहल के तहत, दो कार्यशालाएँ आयोजित की गईं।"ड्रेपिंग डायनेमिक्स: ट्रांसफ़ॉर्मिंग फ़ैब्रिक इनटू फ़ैशन" में फ़ैशन डिज़ाइन और फ़ैब्रिक ड्रेपिंग की मूल बातें सिखाने पर ध्यान केंद्रित किया गया। दूसरी ओर, "कैरेक्टर डिज़ाइन वर्कशॉप" में मौलिक पात्रों और कथानकों के निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया गया। ड्रेपिंग डायनामिक्स: फैब्रिक को फैशन में रूपांतरित करना"इस कैंप में चेन्नई के विभिन्न स्कूलों से कुल 11 उत्साही छात्रों ने भाग लिया। कार्यशाला ने उन्हें ड्रेपिंग तकनीकों का व्यावहारिक अनुभव प्रदान किया, जिससे वे यह जान सके कि कपड़े को किस तरह से स्टाइलिश और फैशनेबल परिधानों में ढाला जा सकता है। डॉ. गीता रंजिनी (एसोसिएट प्रोफेसर) और सुश्री दिव्या के वी (असिस्टेंट प्रोफेसर) के कुशल मार्गदर्शन में, छात्रों ने फॉर्म, फ्लो और फैब्रिक मैनिपुलेशन की बुनियादी अवधारणाओं को सीखा। कार्यशाला को शैक्षिक प्रेरणादायक दोनों दृष्टिकोणों से डिज़ाइन किया गया था, जहाँ छात्रों

को एक संरचित लेकिन आनंददायक वातावरण में अपनी रचनात्मकता को आज़माने और व्यक्त करने का अवसर मिला। पूरे कैंप का माहौल उत्साह, जिज्ञासा और नवाचार की भावना से भरा हुआ था। कई प्रतिभागियों के लिए यह फैशन डिज़ाइन की दुनिया से उनका पहला परिचय था, जिसने उनकी सोच को नए दृष्टिकोण और रचनात्मक करियर की संभावनाओं की ओर मोड़ा। अभिभावकों ने भी अपनी प्रसन्नता व्यक्त की, और बताया कि उनके बच्चे कार्यशाला के दौरान कितने प्रेरित और संलग्न महसूस कर रहे थे।

सभी प्रतिभागी छात्रों को तीन दिवसीय कार्यक्रम के दौरान उनकी भागीदारी और उत्साह को मान्यता देते हुए प्रतिभागिता प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

यह कार्यशाला शिक्षकों के लिए भी उतनी ही संतोषजनक रही, जिन्होंने इन नवोदित प्रतिभाओं का मार्गदर्शन कर आनंद प्राप्त किया और उनके ताज़ा दृष्टिकोणों को देखकर प्रसन्नता महसूस की। संक्षेप में, "ड्रेपिंग डायनामिक्स" कार्यशाला अत्यंत सफल रही और इसने यह सिद्ध किया कि रचनात्मकता की कोई उम्र, सीमा या बंधन नहीं होता।

डिज़ाइन कैंप ने रचनात्मक सोच कौशल, आत्म-अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, दृश्य कथावाचन और सहयोग को बढ़ावा दिया। कार्यशाला के लिए आवश्यक सामग्री संस्थान द्वारा प्रदान की गई।

कलात्मक कहानियाँ - चरित्र डिज़ाइन कार्यशाला

चरित्र-रचना की कला किसी पात्र के सौंदर्यबोध,

व्यक्तित्व, व्यवहार और समग्र दृश्य स्वरूप का निर्माण है।यह चरित्र लक्षणों पर आधारित होती है, जो अद्वितीय दृष्टिकोण, व्यवहार और विश्वास होते हैं जो किसी काल्पनिक पात्र के व्यक्तित्व में योगदान करते हैं।

दिन-1: छात्रों को निफ्ट और पाठ्यक्रमों का संक्षिप्त परिचय दिया गया। इसके बाद, चरित्र डिज़ाइन का परिचय इनपुट के रूप में दिया गया। छात्रों को कहानी डिज़ाइन के लिए रचनात्मक सोच गतिविधियों में शामिल किया गया, जिससे चरित्र डिज़ाइन तैयार हुआ। इसके अलावा, चरित्र-निर्माण गतिविधियाँ - पात्रों के नाम, लक्षण, आवाज़ और उनके रूप-रंग पर विचार करना, दृश्य प्रस्तुतियों, प्रदर्शनों, फिल्मों आदि के माध्यम से इनपुट के रूप में प्रदान किया गया।

दिन-2: सीखी गई जानकारी को आगे बढ़ाते हुए, छात्रों ने पात्रों के रेखाचित्र बनाना और चरित्र डिज़ाइन के लिए टेम्पलेट बनाना शुरू किया। बाद में, उन्होंने कार्यक्रम समन्वयकों के मार्गदर्शन में पात्रों को कठपुतलियों में बदलने का काम किया।

दिन-3: अंत में, चरित्र डिज़ाइन के बाद, विश्व निर्माण और संघर्ष निर्माण - समग्र कहानी कहने के अनुभव को बनाने के लिए पात्रों को विभिन्न दुनियाओं में रखना - सिखाया गया। छात्रों को आवाज़ के अभ्यास, स्वर-परिवर्तन और प्रदर्शन की योजना बनाना सिखाया गया। अंत में, छात्रों ने दो-दो पात्र बनाए, जहाँ पात्रों का उपयोग एक कहानी विकसित करने और उसे ऑडियो-विजुअल माध्यम से प्रस्तुत करने के लिए किया गया। कार्यक्रम समन्वयकों ने सभी पाँचों छात्रों के रचनात्मक परिणामों को संकलित किया और स्टॉप मोशन तकनीक का उपयोग करके बनाई गई कहानी के लिए एक लघु रील तैयार की। अंतिम रील तीन दिवसीय कार्यक्रम के समापन पर समापन समारोह में प्रस्तुत की गई। इस परिणाम की निदेशक, अधिकारियों, कर्मचारियों और गौरवान्वित अभिभावकों ने सराहना की।

इस सफल ग्रीष्मकालीन कार्यक्रम की संकल्पना, समन्वय और क्रियान्वयन संस्थान के संकाय सदस्य श्री श्रीधर अमांची, सुश्री दिव्या एन और श्री उदयराज आर द्वारा किया गया।डिज़ाइन कैंप ने रचनात्मक सोच कौशल, आत्म-अभिव्यक्ति,

कल्पनाशीलता, दृश्य कथावाचन और सहयोग को बढ़ावा दिया। कार्यशाला के लिए आवश्यक सामग्री संस्थान द्वारा प्रदान की गई।

धरोहर के धागे : ऊटी की टोडा कढ़ाई

मेट्टुपालयम के पर्वत, नभ को छूते गीत,
धूप की चुप्पी में सुनाएँ धरा की रीत।
नारियल के झुरमुट, मंदिरों की टेर,
इन शांत पहाड़ों में है समय भी ठहर।

नीलगिरी

नीलगिरी की गोद में बसा ऊटी बॉटनिकल गार्डन मानो हरे रंग की अनेक छटाओं का सुंदर दुशाला हैं। घुमावदार रस्ते फूलोंसे इस तरह सजे है मानो किसी चित्रकारने सब तरफ चित्र बनाए हो!!

नीला आसमान और उस आसमान को छूते युकिलिप्टस के पेड़ एक पोस्टकार्ड चित्र की अनुभूति देते हैं!!

यहाँ की सौंधी खुशबू और हल्की हल्की धुंध वातावरण में एक अलग ही जादू भर देती है !!

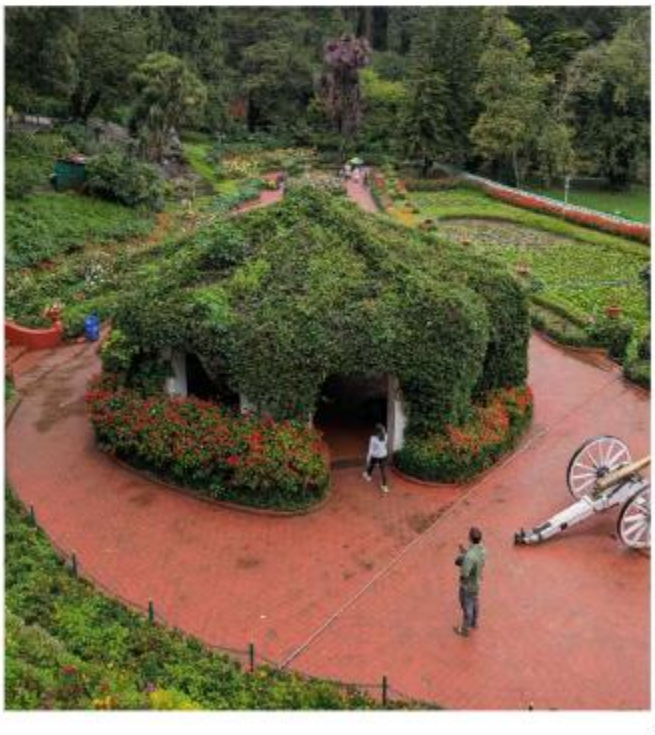

नीले नीले आसमान के नीचे हरे हरे बग़ीचे
से उठती हल्की हल्की खुशबू !!

चाय के पत्ते में होनेवाली सरसराहट और
पेडीदार
बागान में काम करनेवाली औरतों के
लोकगीतों की धुन, सब कुछ मन को एक
अलग ही सुकून देते हैं।

बादलों की ओट में बसा है एक संसार,
झीलों की लोरी, पहाड़ों का प्यार।

फूलों की ख़ुशबू, पेड़ों की बात,
टोड़ा गाँव में साँस लेती है प्रकृति हर एक रात।

प्यकारा की धार, रेशम सी बहे, हर बूँद में सूरज की मुस्कान सहे।
पेड़ों की फुसफुसाहट, झील का गान, प्रकृति के आँचल में बसी एक जान।

श्रीनगर की यादें

श्रीधर आमंची
एसोसिएट प्रोफेसर
निटवेयर डिज़ाइन विभाग

भारत देश पर्यटन के लिए प्रसिद्ध क्षेत्र है । भारत के पर्यटन स्थलों में कश्मीर सबसे महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है । श्रीनगर कश्मीर की राजधानी है । श्रीनगर अपनी संस्कृति, कला और हस्तशिल्प के लिए विश्वविख्यात है । पिछले जून महीने में मुझे वो अनोखा अवसर मिला श्रीनगर की यात्रा करने का । मेरे लिए यह सपना सच होने के बराबर था ।

बचपन से सुनते और फिल्मों में कश्मीर की खूबसूरती महसूस करते आया और अब मुझे उसे अपनी आँखों से देखने का विशेष अवसर मिला । इसके लिए मैं राष्ट्रीय फ़ैशन प्रौद्योगिकी संस्थान को भी धन्यवाद देना चाहता हूं । निफ्ट कार्यालय द्वारा आयोजित फैकल्टी रिट्रीट कार्यक्रम में भाग लेने के लिए मैं श्रीनगर पहूंचा । श्रीनगर पहूंचते ही वहाँ के ठंडे मौसम ने स्वागत किया और चारों ओर फैले चिनार के पेड़ दृश्यात्मक लगें । कश्मीर अपनी मेहमान नवाज़ी के लिए प्रसिद्ध है और इस कार्यक्रम के दौरान मैंने चार दिन इसको बेहद महसूस किया ।

कश्मीर / श्रीनगर के लोग विनम्र और शांत स्वभावी है । श्रीनगर की यात्रा से मेरा एक सपना साकार हुआ । कार्यालय का काम खतम होते ही हम श्रीनगर की सैर पर निकले । श्रीनगर में सूर्यास्त देरी से होता है जो हमारे लिए बहुत मददगार रहा । हम शाम से लेकर आधी रात तक घूमते थे । कश्मीर के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल जाने का मौका जिंदगी भर नहीं भूल पाएंगे ।

श्रीनगर के विश्वप्रसिद्ध दल झील पर पहूंचते ही मन आनंद से खिल उठा । दल झील पर तैरते हमें पहाड़ देखने का अवसर मिला । उन पहाड़ों में एक पहाड़ पर श्री आदि शंकराचार्यर का मंदिर देखा । वह मंदिर 9 वीं शताब्दी में बनाया गया था । पुराना मंदिर आज भी उतनी ही कलात्मकता दर्शित करती है । निशांत बाग से ड़ल झील को देखना अद्वितीय रहा । गुलमार्ग जाने के रास्ते में दोनों तरफ फूलों का कालीन बिछाया हुआ लग रहा था । मुगल काल की सुंदरता और रचनात्मक संस्कृति को देखकर लगा कि हम भी भारतीय इतिहास का हिस्सा है ।

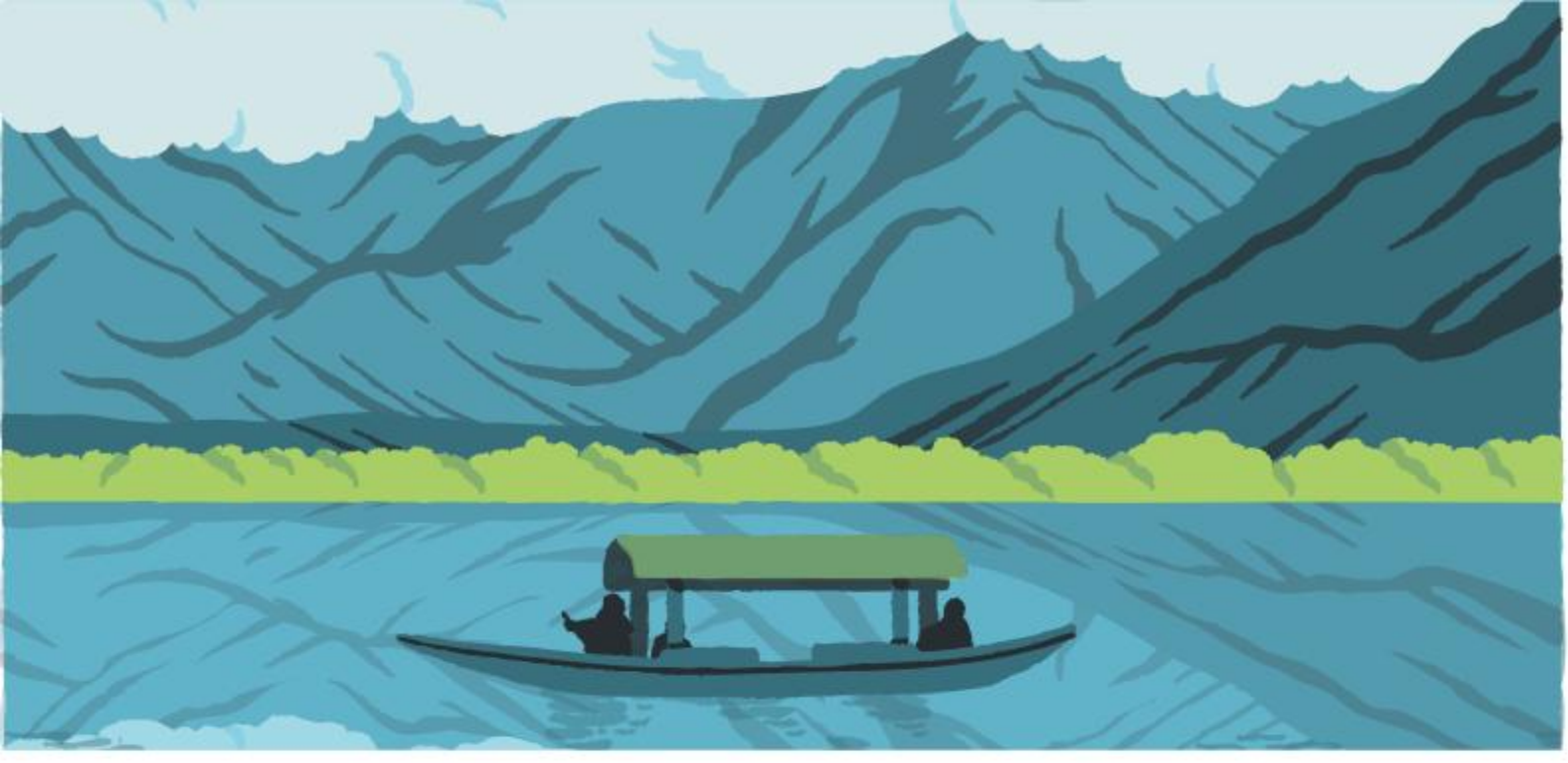

पहलगाम और दूधपत्री के पर्यटन का मौका अगले शाम को मिला । पहलगाम श्रीनगर से कुछ मील दूरी में है । रास्ते में हम छोटे गांव और गलियों के बीच से गुज़रे । हमें वहाँ के गाव की जीवन शैली अच्छी लगी ।

वहाँ के लोगों के मुस्कुराते चेहरे देखकर मन हल्का हुआ । पहलगाम फिल्मी गानों और नाच के लिए अच्छी जगह है। हम में से कई लोगों ने वहाँ के नज़ारे कभी न कभी किसी फिल्म में जरूर देखे होंगे । हम ने वहाँ बहुत फोटो खींचे । दूधपत्री जगह बहुत सुंदरमय और आकर्षक है ।

उस जगह को यह नाम इसलिए मिला कि वहाँ के पहाड़ों से गिरता जो झरना और उसका फेन दूध कि तरह सफ़ेद और कोमल है । ड कि वजह से पानी में उतर नहीं पाए, पर उस किनारे का अत्यंत आनंद लिया । सवारी करने के लिए घोड़े भी मौजूद थे । ठंअलग रंग के घोड़ों को देखने का दृश्य आकर्षक रहा ।

श्रीनगर सिर्फ पर्यटन के लिए ही नहीं बल्कि अपने पकवान के लिए भी प्रसिद्ध है । इस यात्रा के अवसर पर मुझे विश्वप्रसिद्ध कश्मीर वाजवान खाने का मौका मिला । वाजवान कश्मीरी पारंपरिक भोजन है । मुझे कहवा चखने का आनंद भी मिला । कहवा एक प्रकार के पीने का पानी जिसमें बादाम और केसर डालकर गरम करके पीते हैं । यह कश्मीरी रिवाज़ है । कहवा मुझे इतना पसंद आया कि मैं उसका मिश्रण एक दुकान से खरीदकर घर लाया ।

कश्मीर की हस्तकला पारंपरिक तकनीकों से की जाती है । कुछ हस्तकला वस्तु जैसे पश्मीना शॉल, कालीन, लकड़ी की नक्काशी अत्यंत आकर्षक है। मैंने पेपर मेश के कुछ हस्त शिल्प खरीदें । कशीदा की कढ़ाई कश्मीर की संस्कृति की पहचान है ।

श्रीनगर की यात्रा मेरे लिए अविस्मरणीय रही और दृश्यात्मक जगह का आनंद दिया । अगर मौका मिले तो और एक बार कश्मीर जाने की मुझे इच्छा है ।

सुख और दुख की यात्रा

स्वयंबित साहू
बी एफ टी , सेमेस्टर -7

जिंदगी एक कहानी है , एक लंबी दास्तां
जहां खुशी और गम, दोनों एक ही अरमान ।
कभी सूरज की रोशनी से चमक उठी दुनिया
कभी अंधेरे ने दिल को दर्द से भर दिया ।

एक दिन खुशी आयी, हवाओं में लहरते फूल
दोस्तों के संग वो हंसी, सपने जैसे स्कूल ।
कॉलेज की गलीया वो लमहें रंग विरंगे
दोस्ती के बाद, जो लगे अमंगे ।

हर एक पल में था अपनेपन का एहसास ,
देर रातों को जाग कर, सपनों का होता था विश्वास ।
पर कभी कभी जो दिखते थे अपने ,
दोस्ती के नकाब में छुप गए सपने ।

धोखे का एक पल, छुपा है दर्द का समुंदर
जो दोस्ती थी गहरी, बन गयी एक अंधेरा सफर ।
जहां हसी थी, अब है बस खामोशी का साथ
जो कभी अपने थे, वही कर गए फासलों की बात ।

ये कॉलेज के दिन, जैसी एक रंगीन किताब
जिसमें हर किस्से में है एक प्यार और एक खवाब ।
दोस्ती, प्यार, धोखा – सब कुछ सीखा यहाँ
जिंदगी के इस मोड पर मिले कितने इम्तिहान ।

पर जो सीखा, वो जिंदगी का राज बना
गम के बाद जो खुशी मिली, वो ही साथ बना ।
दोस्तों से धोखा, पर कुछ रहे सच्चे भी
उन्हीं के साथ है अब सपने नए और कुछ कच्चे भी ।

जिंदगी के सफर में, खुशी और गम का है रंग
दोस्ती में भी कभी – कभी छुप जाता है ढंग ।
कॉलेज की यादों में हर एक कहानी,
जो खुशी और धोखे के बीच लिखी एक दास्तान पुरानी ।

जिंदगी का सफर यूंही चलता रहे ,
कभी दोस्ती, कभी धोखा , पर सपनों को सच बताते रहे ।
दोनों के संग में जीने का मजा है ,
जहां खुशी है, वहां गम भी है एक रंग ।
जिंदगी की खूबसूरती तो तभी है यार ,
जहां हम खुशी में भी और गम में भी रहेंगे तैयार ।

सुख और दुख की यात्रा

हीबा सय्यद
लेदर डिजाइन , सत्र - 3

याद है मुझे,
रोज सुबह मां उठती थी उस नींद से
जो सिर्फ पलकें भारी होने पर आ जाती थी ।
जब मन सुकून के घेरे में था
दूर कहीं छल कपट के फेरे में था ।
याद है मुझे, उस दौड़ को
बस में सीट बचाने के लिए हुआ करती थी
और वह बोझ, जिंदगी नहीं
किताबें लगा करती थी ।
याद है मुझे, जब
आँखों में जलन नींद की थी, थकान की नहीं
जब चिंता सिर्फ टिफिन की थी, मकान की नहीं ।
याद है मुझे, जब
मां से हाथ हिलाया करती थी
चोट लगने पर पास बिठाकर
बोली का मरहम लगाया करती थी ।
याद है मुझे, जब
उस बच्चे से शर्त लगाई थी
इजाज़त ली क्या उसकी
जब उसके हक की रातें
और नींद गवाई थी ।याद है मुझे, जब
सवालों को जवाबों के साथ
और सवाल जुड़ जाते थे
जब परियों, शहजादों और भूतों पे
यकीन कर लिया करते थे
शायद उड़ना मुमकिन था
जलपरियों से मिलने की कहानी
बुना करते थे ।
याद है मुझे, जब
लोगों को समझना नहीं चाहते थे
बचपन के पाठ रटे नहीं जाते थे
बचपन जिया खूब
पर एक गलती कर दी मैंने
बड़े होने की उम्मीद रख ली ।
याद है मुझे, जब
अपने हाथों से ख़यालों को
सजाया करते थे ,
याद है , जब हम बच्चे हुआ करते थे ।

तनाव और मानसिक बीमारी

सुश्री एस. धनलक्ष्मी
प्रयोगशाला सहायक, टीडी

तनाव हर किसी के लिए एक सामान्य अनुभव है और यह हमारे दैनिक जीवन में काम, शिक्षा और खेल या किसी भी अतिरिक्त गतिविधियों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के दबाव बढ़ने के कारण सामने आता है। तनाव के कई कारण हैं, यह काम से संबंधित मुद्दों, वित्तीय समस्याओं, व्यक्तिगत संबंधों और स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं के कारण हो सकता है।

दरअसल तनाव को आम तौर पर मानसिक स्वास्थ्य समस्या नहीं माना जाता है लेकिन तनाव कई तरह से हमारे मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ा होता है और अगर हम इसे प्रभावी ढंग से प्रबंधित नहीं करते हैं तो यह हानिकारक भी हो सकता है। दीर्घकालिक तनाव चिंता विकार, अवसाद, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, मधुमेह जैसी शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म दे सकता है और हमारे दैनिक जीवन पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

तनाव को प्रबंधित करने में विभिन्न प्रकार की तकनीकें और प्रथाएं शामिल होती हैं जो हमें तनाव के स्तर से निपटने और उसे कम करने में मदद करती हैं। तनाव को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के कुछ तरीके हैं।

सबसे पहले, हमारे जीवन में तनाव के स्रोतों की पहचान करना महत्वपूर्ण है, हमें अपनी दैनिक दिनचर्या की गतिविधियों और रिश्तों का विश्लेषण करना चाहिए और उन ट्रिगर्स को इंगित करने का प्रयास करना चाहिए जो तनाव का कारण बनते हैं। एक बार जब हम तनाव के स्रोतों की पहचान कर लेते हैं, तो हम उन्हें प्रबंधित करने या खत्म करने के लिए रणनीति विकसित करना शुरू कर सकते हैं। दूसरा, हम अपने मन को शांत करने के लिए ध्यान, गहरी सांस लेने या योग जैसी विश्राम तकनीकों का उपयोग कर सकते हैं। ये तकनीकें हमें वर्तमान क्षण पर ध्यान केंद्रित करने और चिंताओं और नकारात्मक विचारों से छुटकारा पाने में मदद कर सकती हैं। तीसरा, हम तनाव दूर करने और तनाव कम करने के लिए व्यायाम, खेल या बाहरी गतिविधियों जैसी शारीरिक गतिविधियों में संलग्न हो सकते हैं। शारीरिक गतिविधि न केवल हमें स्वस्थ रहने में मदद करती है बल्कि एंडोर्फिन भी जारी करती है जो प्राकृतिक मूड-बूस्टर है।

अपने मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना आत्म-प्रेम का कार्य है।

चौथा, कई लोग मानसिक स्वास्थ्य को निरंतर खुशी और संतुष्टि की स्थिति मानते हैं, जबकि वास्तव में यह जीवन के सामान्य तनावों से निपटने की क्षमता है।अच्छा मानसिक स्वास्थ्य हमें जीवन के सामान्य तनावों से निपटने, उत्पादक रूप से काम करने और हमारे समुदायों में सार्थक योगदान देने में सक्षम बनाता है। तो आइए हम सभी मानसिक स्वास्थ्य को अपने जीवन में प्राथमिकता दें, इसमें पर्याप्त नींद लेना, स्वस्थ आहार खाना, शारीरिक गतिविधि में संलग्न होना और अपने समय का प्रभावी ढंग से प्रबंधन करना शामिल है। ऐसा करने से हम अपने रास्ते में आने वाली चुनौतियों से निपटने, अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचने और खुश और पूर्ण जीवन जीने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित होंगे।

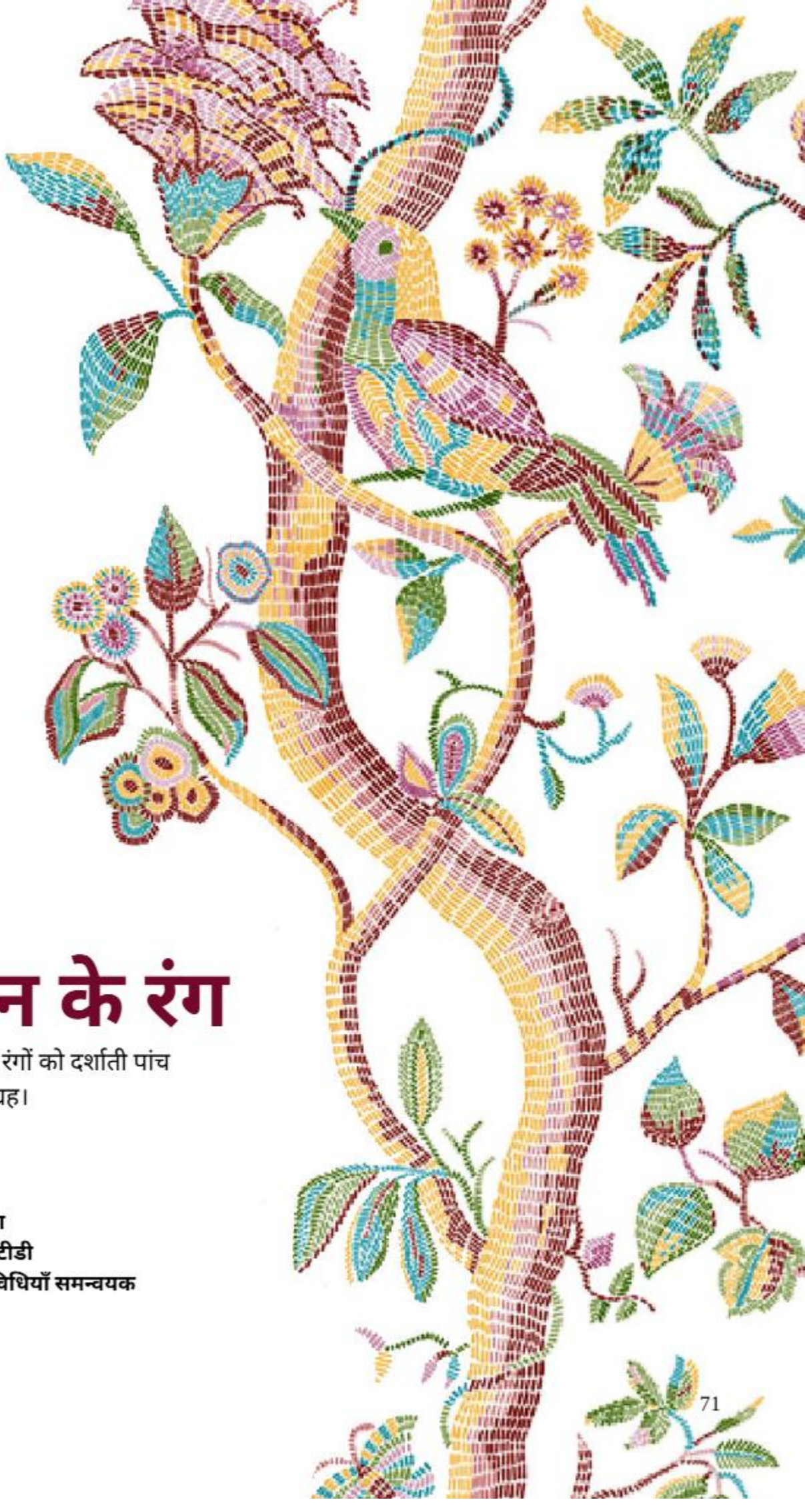

जीवन के रंग

जीवन के विभिन्न रंगों को दर्शाती पांच कविताओं का संग्रह।

सुश्री सरदवती दत्ता
सहायक प्रोफेसर, टीडी
छात्र विकास गतिविधियाँ समन्वयक

मिट्टी से भी यारी रख, दिल से दिलदारी रख।

चोट न पहुंचे बातों से, इतनी समझदारी रख।

पहचान हो तेरी हटकर,भीड़ में कलाकारी रख।

पल भर ये जोश जवानी का, बुढ़ापे की भी तैयारी रख।

दिल सबसे मिलता नहीं, फिर भी ज़ुबान प्यारी रख।

मन ही मन को जानता,

मन ही मन से प्रीत

मन ही मनमानी करे,

मन ही मन का मीत

मन झूमे, मन बावरा,

मन की अद्भुत रीत

मन के हारे हार है,

मन के जीते जीत॥

पानी को बर्फ में बदलने में वक़्त लगता है,
ढले हुए सूरज को निकालने में वक़्त लगता है।

थोड़ा धीरज रख, थोड़ा और ज़ोर लगाते रहना,
जंग लगे दरवाजे को खोलने में भी वक़्त लगता है।।

कुछ देर रुकने के बाद फिर से चल पड़ना तुम,
हर ठोकर के बाद संभालने में वक़्त लगता है।

बिखरेगी वही चमक तेरे वजूद से, तू महसूस करना,
टूटे हुए मन को संवारने में वक़्त लगता है।।

जो तूने कहा कर दिखाएगा, रख यकीन,
गरजे जब बादल तो बरसने में भी वक़्त लगता है।

खुशी आ रही है और आएगी ही, इंतज़ार कर,
समय का चक्र बदलने में भी वक़्त लगता है।।

ज़िंदगी का हर सुबह

कुछ शर्तें लेके आत है।

और ज़िंदगी का हर शाम

कुछ तजुर्बे देके जाता है॥

मंज़िल चाहे कितनी भी

ऊंची क्यों न हो

रास्ते हमेशा पैरों के नीचे होते हैं!

जो निखर कर बिखर जाए

वो कर्तव्य है और

जो बिखर कर निखर जाए॥

वो व्यक्तित्व है॥

किरदार चाहे जो भी हो
कहानी हसीन होनी चाहिए
दिल में अच्छाई और
आँखों में प्यार होना चाहिए
मायूसी में क्या रखा है
ज़िंदगी तो गुलज़ार होनी चाहिए
सजते तो सभी हैं आजकल
पर उसमें थोड़ी सादगी कि मिलावट भी होनी चाहिए
यूं तो सबके ज़िंदगी का सफर आसान नहीं होता
ज़िंदगी जीने के लिए खुशमिजाज़ होना चाहिए
मिठास होठों पर नहीं
दिल में होनी चाहिए
लोग चाहे जैसे भी बर्ताव करें
पर आपके बर्ताव में संस्कार होने चाहिए
स्वार्थ से भरी इस दुनिया में
थोड़ा निस्वार्थ भी होना चाहिए
किरदार चाहे जो भी हो
कहानी हसीन होनी चाहिए।

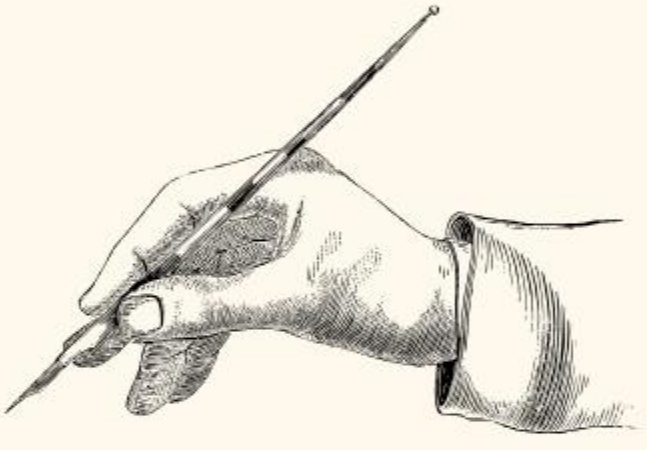

राजभाषा अनुभाग,

राष्ट्रीय फ़ैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, चेन्नै